गिरिधर मालवीय
पूर्व न्यायाधीश, उच्च न्यायालय

26 अमरनाथ झा मार्ग,
इलाहाबाद–211002
दूरभाष–☎0532–600464, 600806

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी,

विश्व स्नेह समाज मासिक पत्रिका के प्रकाशन के लिये आपको हार्दिक बधाइयॉ। जैसा पत्रिका के नाम से ही स्पष्ट होता है कि यह पत्रिका अपने नाम के अनुरूप ही विश्व मे चतुर्दिक स्नेह का सिंचन कर स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने में सफल हो दीर्घ काल तक प्रकाशन का गौरव प्राप्त कर सके। इसके लिए मैं अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

सद्भावनाओं सहित,

भवदीय

,

(गिरिधर मालवीय)

432953:☎ M-TECH
(COMPUTER EDUCATION CENTRE)
बच्चों के लिए विशेष कोर्स
शीघ्र प्रारम्भ हो रहा है
इग्नू द्वारा संचालित :
एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ,
डोयेक नईदिल्ली द्वारा संचालितः ओ लेवल,
ए लेवल
माखन लाल चर्तुवेदी रा0 प0विश्वविद्यालय द्वारा संचालित
: पीजीडीसीए, डीसीए
टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट
कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क, थीसीस
सम्पर्क करेः कौशाम्बी रोड, धुस्सा,ग्राम प्रधान की मकान,इला0

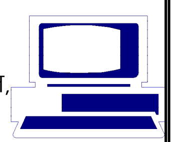

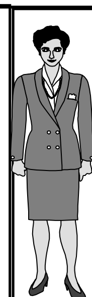

जय माता दीं
फैशन लेडीज टेलर्स
735/1, जायसवाल मार्केट, कटरा, इलाहाबाद
हमारे यहॉ सभी प्रकार के लेडिज सूट की सिलाई विशेष कारीगरों द्वारा उचित मूल्य पर की जाती है।
एक बार सेवा का मौका अवश्य दे।
एक बार आयेगे विज्ञापन पढकर, बार–बार आयेगे काम देखकर
प्रो0 राकेश गुप्ता

Phone No☎: Resi. : 653369 Shop : 610202
चौरसिया साफा हाऊस
चौरसिया फायर वर्क्स
86/1, म्यूनिस्पल मार्केट, चौक, इलाहाबाद
हमारे यहॉ लॅहगा, चुनरी, साफा, और
कालगी शिवा काशी में बनी अतिशबाजी
के थोक व फुटकर विक्रेता
नोटःलहॅगा व ज्वेलरी सेट किराये पर दिये जाते है

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त रजि0 : 832
Luasgkxu dyk dsUnz
(गोकुल पब्लिक फाउन्डेशन सोसायटी द्वारा संचालित)
एम0टेक0 कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर
कौशाम्बी रोड, धुस्सा (ग्राम प्रधान की मकान)
मार्च से प्रारम्भ
0सिलाई 0कढाई
0पेटिंग 0 इंग्लिश स्पोकेन
(फ्री कम्प्यूटर एजुकेशन के साथ)

nwjn'kZu bysDVªkfuDl
53/38, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद–211016
हमारें यहॉ सभी प्रकार की टी.वी.,
डेक, ऑडियों, वीडियों और इलेक्ट्रॉनिक्स
, विज्ञापन बोर्ड नए बनते है तथा रिपेयरिंग होती है।
प्रो0 हरिशंकर शर्मा

मासिक पत्रिका
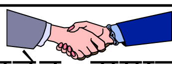

विश्व स्नेह समाज

वर्ष : 1, अंक 6, मार्च 2002

संरक्षक : श्री बुद्धिसेन शर्मा ☎:657075

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक :
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादक : डॉ0 कुसुम लता मिश्रा
☎:686238

सलाहकार संपादक :
नवलाख अहमद सिद्दीकी

विज्ञापन व्यवस्थापक / प्रबंध संपादक
श्रीमती जया द्विवेदी

सहायक संपादक :
0 रजनीश कुमार तिवारी 0 सीमा मिश्रा

विशेष सहयोग : ज्ञानेन्द्र सिंह

ब्युरो :
सोशन एलिजाबेथ (इलाहाबाद)
हरि प्रताप सिंह, (इलाहाबाद)
पृथ्वी राज सिंह (सामाजिक व्यूरो, इला0)
रमेश त्रिपाठी (कौशाम्बी)
श्रीमती पुष्पा शर्मा (पटना)
गिरिराजजी दूबे (गोरखपुर)
सूर्यकांत त्रिपाठी (फतेहपुर)
मो0 तारिक ज्या (जौनपुर)
मिस संहमित्रा भोई (उड़ीसा)
मिस लक्ष्मी हजोअरी (आसाम)

कम्पोजिंग एवं डिजाईनिंग :
मो0 तारिक ज्या, एफ0सी0एल0सी0
जेल रोड, नैनी, इलाहाबाद–8

सम्पादकीय कार्यालय :
277 / 486,जेल रोड, चकरघुनाथ,
नैनी, इलाहाबाद, फोन ☎ 432953

कार्यालय :
एम.टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर
कौशाम्बी रोड, धुस्सा, इलाहाबाद

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

स्वत्वाधिकारी व प्रकाशक **जी0के0 द्विवेदी** द्वारा **भार्गव प्रेस**, बाई का बाग, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 277 / 486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

प्रिय पाठको

नमस्कार।

आपके स्नेह साहचर्य के समग्र सहयोग से आपकी प्रिय पत्रिका निर्विघ्न रुप से निर्दिष्ट यात्रा–पथ पर अग्रसर हैं। सुधी पाठकगण अपने विचार हमें नियमित रुप से भेजते है। इसके लिए हम हृदय से उनके आभारी है। कुछ प्रतिक्रियायें महानगरी से भी आई है कि यह पत्रिका उत्तम है, जो उन तक उपलब्ध नहीं हो पा रही है। अतः हमारा अगला प्रयास रहेगा कि यह पत्रिका मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली आदि शहरों के मुख्य बुक स्टालों पर उपलब्ध हो।

आज जो विश्व विखरा पड़ा है उसे नियंत्रित करने में दो तत्व प्रमुख रुप से प्रधान थे जिसमें सामाजिक गठन के द्वारा समग्र को साधते थे प्रथम धर्म तंत्र। द्वितीय राजतंत्र, इनके मध्य की कड़ी शिक्षा होती थी। राजतंत्र प्रबन्धन एकता एवं राष्ट्र कि सुरक्षा तक सीमित थी, बाहरी आक्राताओं से देश की रक्षा करना अन्दर के अराजक व्यक्तियों को दण्ड देना उन्हें सुधारना प्रमुख कार्य थे। जनमानस के मानसिक स्वास्थ्य विकास उनको परिष्करण का दायित्व धर्म तन्त्र निबाहता था। शिक्षा इन दोनों आधारों से शक्ति सम्पन्न हो फलीभूत हो विराट बनती थी। तलदर्शी होती, नीर–क्षीर विवेचन मे दक्ष होती थी। तभ धरा–धाम में सन्तुलन था।

काव्य प्रवाह के साथ धर्म आज मुद्दा हो गया। वे मंदिर मस्जिद से जुड़ गये, आतंकवाद एवं मंदिर मुद्दा प्रमुख समस्या बन गई। "शिक्षा जो आज त्रिशंकु की तरह लटक रही है, वह पहले सामाजिक नियत्रंण के उपकरण के रुप में लिया जाता था। जिसमें चरित्र निर्माण प्रमुख था।

मैथ्यु आर्नल्ड ने धर्म और नैतिकता मे विभेद करते हुए कहा था–"धर्म संवेगो से युक्त नैतिकता है किंतु सभी नैतिक कार्य शुभ लक्ष्यों द्वारा प्रेरित है।" किन्तु आज के परिवेश में शुभ लक्ष्य स्वहित के लक्ष्य का प्रारुप बनकर रह गया है, सिमट गया है।

धर्म में सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् का अपूर्व समन्वय प्राप्त होता है, वह चाहे मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा या गिरजाघर क्यों न हो हमें वही जाकर शान्ति मिलती थी आत्मिक बल की प्राप्ति होती थी और हमने आज उसे छिन्न–भिन्न कर दिया, वर्षो से अयोध्या राममंदिर मे पूर्जा, आरती होती थी किन्तु मजहब के नाम पर भौड़ी राजनीति के चलते हमने गुम्बदों को तोड़कर खून की नदी बहा दी। अपने अराध्य देव राम को तम्बुओं में बैठा दिया। यह कैसा धर्म है, जो राम का दुबारा निर्वासन दे दिया है।

जनमानस में अशान्ति भर दिया है। जो राजनीति से कोसों दूर है वे बिचारे अनायास मारे जा रहे है। हिंसा ही हिंसा हर ओर व्याप्त है।

गांधी जी पूर्ण अहिंसात्मक सिद्धातों पर आधारित समाज का निर्माण करना चाहते थे। गांधी जी मानव समूह को भगवान का ही विराट रुप मानते थे। उन्हीं के शब्दों में –"यदि मैं जानता कि भगवान मुझे हिमालय कि गुफा में मिलेगे तो मैं तुरन्त वही चला जाता, पर मैं जानता हूँ कि उन्हें मानव समूह से पृथक नहीं पा सकता।" वे ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे, किन्तु आज उनके स्वप्न चकनाचूर है। आज जहां मानव समग्रता का आवेग है, जहां प्रसन्नता है जिंदगी है वहीं आतंकी मौत नृत्य करती है।

आज के बालक, युवा, युवती उन परिन्दों जैसे विश्व गगन में उड़ान भरे जिनका कोई मजहब नहीं तो पूज्य बापू कालजयी अध्येता के स्वप्न साकार हो उठे। समग्र विश्व स्नेह शान्ति के आकाश गंगा में सराबोर हो उठे।

"परिन्दों के मजहब तो देखिये
इनमें रश्क नहीं होता
कभी मंदिर पर जा बैठे
कभी मस्जिद पर जा बैठे।"

डा0 कुसुम लता मिश्रा "सरल"

बेबाक

1. उत्तर प्रदेश नाहीं सपा के करेजा जरत बा, तोहि लोग जानेला कि जेकर करेज़ा जरेला ओकर का हाल होला।

राजनाथ सिंह,मुख्यमंत्री, उ0प्र0,
वाराणसी में जनसभा में बोलते हुए

2.कथनी–करनी में अंतर के कारण भारतीय जनता पार्टी अंतिम सॉसें गिन रही है।

लोकपति त्रिपाठी
(वरिष्ठ कांग्रेसी नेता)

3 माया (धन) के बिना मायावती काम नहीं कर सकतीं। दो बार आपने बसपा को वोट दिया, लेकिन गया वह भाजपा की झोली में।

अमर सिंह
(सपा महासचिव)

4. हमारी पार्टी ने माफिया पृष्ठभूमि वाले प्रत्याशियों को टिकट न देकर राज्य के सामने एक नया एजेंडा प्रस्तुत किया है।

लालकृष्ण आडवाणी
(केन्द्रीय गृहमंत्री)

5.शहीदों के कफन पर दलाली करने वाले लोग उत्तराखंड की देशभक्त जनता के सगे नहीं हो सक्ते।

सोनिया गॉधी
(कॉग्रेस अध्यक्ष)

6. प्रधानमंत्री को विहिप से कड़ाई से निपटना चाहिए। राम और झूठ साथ–साथ नहीं चल सक्ते।

विश्वनाथ प्रताप सिंह
पूर्व प्रधानमंत्री

7. अपराधियों को राजनीति से जोड़ने के कारण राजनीति के प्रति आम लोगों में गलत संदेश जा रहा है।

शबाना आजमी
सांसद एवं अभिनेत्री

8. मैं निषाद हूं। मेरा आपका खून का रिश्ता है। मै। अपने परिवार के बीच आया हॅू। टुकड़ों में बंटे निषाद समुदाय को एक सूत्र में पिरोकर एकजुटता का अहसास कराना है।

कल्याण सिंह
पूर्व मुख्यमंत्री, उ0प्र0

9. अयोध्या मामले पर न्यायालय का कोई महत्व नहीं है। आस्था के मामले मे कोर्ट की भूमिका हो भी नहीं सकती।

अशोक सिंघल
कार्यकारी अध्यक्ष, विहिप

10.ओमप्रकाश चौटाला भी अपने पिता चौधरी देवीलाल की राह पर चल रहे है। जब देवीलाल को भाव नहीं मिला तो चौटाला कहां टिकेगें।

अजित सिंह
केन्द्रीय कृषि मंत्री

11. भाजपा सरकार अर्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्व बैंक के इशारे पर चल रही है। इससे उत्तर प्रदेश के उद्योग एवं खेती बरबाद हो गई है।

अतुल अंजान
राष्ट्रीय सचिव, भाकपा

12. मुसलमानों ने 1996 में मुलायम की पार्टी को वोट दिये लेकिन जब मौका आया तो उन्होंने बाबरी मस्जिद गिराने वाले साक्षी महाराज को राज्यसभा में भिजवा दिया।

शाही इमाम
दिल्ली जामा मस्जिद

13. मीडिया उतना ही जानता है जितना विहिप के लोग उनसे कहते है। वे लोग मुझसे आकर क्या कहते है, यह मीडिया नहीं जानता।

अटल बिहारी वाजपेयी
प्रधानमंत्री

14. उत्तर प्रदेश के मतदाताओं को फैसला करना है कि वे राज्य का विकास चाहते हैं या विनाश।

नारायण दत्त तिवारी
वरिष्ठ कांग्रेस नेता

आपकों यह हमारा नया स्तम्भ कैसा लगा।
आप अपने विचार हमें अवश्य लिखे।

खुला मंच

जहॉ आज विश्व के तमाम देश के वैज्ञानिक उपलब्धियों के चलते गिनीज बुक में अपना दर्ज करा रहे है, वहीं हमारा देश हर माह एक नया नाम दर्ज करा रहें है, वहीं हमारा देश हर माह एक नया प्रधानमंत्री बदलने में महारत हासिल की है। ये भी एक महान उपलब्धि है।

इसको झुठलाया नहीं जा सकता है कि आज इन भ्रष्ट महान नेताओं के नाम याद करने में छात्रों को अपने सामान्य ज्ञान के लिए एक्सट्रा मेमोरी चाहिए। आप एक सवाल करेंगें वो कैसे? मैं बताऊॅगा कि आप ही बताइये जिस प्रदेश में 95 मंत्रियों का मंत्रीमंडल हो भइया उसको कैसे याद करेंगे? रही बात हमारे नेताओं की तो वह तो महान हैं, मानो आई0ए0एस0 और पी0सी0एस0 उनकी जेब में हों। सारे का सारा महकमा उनकी अपनी सम्पत्ति हो। जरा सी बात हुई नेता जी ने फोन उठाया, अपना मंत्र पढा, मानो उस अधिकारी का बोरिया बिस्तर बंध गया। वह बेचारा क्या करता, नेता जी का मंत्र बहुत ही असरदार था, ज्यादा करे तो वह अपने घर में बैठा मक्खी मारे, बच्चे भूखे रहें। इससे तो अच्छा है कि वह गलत को सही मानकर चुप, इसी में उसकी भलाई है।

हमारे नेता जी जब मंच पर चढ कर मंत्र पढते हैं तो वह सुनने के काबिल होता है।नेता जब अपने भाषण में कहते हैं–''भाइयों और बहनों हम अभी क्या दें, अभी तो हम खाली है। लेकिन मैं आप लोगों को कुछ दे सकता हूॅ। क्योंकि मैं इस महान देश का महान कपूत हूॅ। हम आप लोगों को गरीबी देगें, बेरोजगारी देगें, झूठे वादे देगें। एक से बढकर माफिया देगें। और तो और खाने के नाम पर जहर देगें। रामराज्य के स्थान पर गुण्डाराज देगें। ज्यादा बोलोगे तो मार देगें।''

अब आप ही बताइये कि आप इतने महान नेता को कैसे भूल सकते है?

भइया आप लोगन का हम बताई आज के नेतवन के साथ जो उनके अनुयायी रहते हैं, उनकें सामने जो अपना मुॅह खोला नाहि कि तुरन्त हमेंशा का बन्द समझौ भइया। इस लिहाज से आपन मुॅह बन्द राखौ, यही मा भलाई बा!

नौलाख अहमद सिद्दिकी

अखाड़े में तीन पहलवान

dkSu thrsxk dkSu gkjsxk

बंजरंगी सिंह / नौलाख सिद्दीकी

इलाहाबाद महानगर की तीनों विधानसभाई सीटों पर 'शह–मात' का खेल चल रहा है। कौन जीतेगा और कौन हारेगा यह फिलहाल अभी तक साफ नहीं हो पाया है। नित्य नई तस्वीर बन रही है और विगड़ रही है। क्षेत्र की जनता ने चुप्पी साध रखी है। प्रत्याशियों तथा उनके समर्थकों के मिलने पर वह रहस्यमय हंसी होंठ पर विखेर कर स्थिति और भी रहस्यमय बना दे रहा है। सभी प्रमुख दलों के प्रत्याशी मतदाताओं को अपने पक्ष में करने की कोशिश में पूरी तरह जुटे है। ऊँट किस करवट बैठेगा दावे से कह पाना मुश्किल है, क्योंकि इस बार तीनों विधान सभा क्षेत्रों का जातीय गणित में काफी उलट–फेर होता नजर आ रहा है। पिछले विधान सभा में जिस समीकरण के बल पर प्रत्याशी विजय हासिल किये थे। वह समीकरण इस बार उलट–पुलट गया है। रिकार्ड मतों से विजय हासिल करने तथा अभी तक अजेय रहने वाले महानगर क्षेत्र के तीनों सीटों के प्रत्याशियों की नींद हराम है। पिछली 13 वी विधानसभा के चुनाव में शहर उत्तरी से भाजपा के प्रत्याशी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग के प्रोफेसर रहे डा0 नरेन्द्र कुमार सिंह गौर अपने प्रतिद्वदी यों को अच्छे मतों के अन्तर से हराकर विधानसभा में पहुँचे थे। वह प्रदेश सरकार में पिछले पॉच वर्षो तक कैबिनेट मंत्री भी रहें। वह अपने मंत्रित्व काल में क्षेत्र में कराये गये विकास कार्य तथा अपनी स्वच्छ छबि के बल पर वोट मॉग रहे है। इस बार उन्हें अपने पिछली बार के दो प्रतिद्वन्दियों के अलावा सपा प्रत्याशी हाईकोर्ट के अधिवक्ता टी0पी0 सिंह से भी मुकाबला करना पड़ रहा है। इस बार डा0 गौर को अपने परम्परागत कायस्थ मतदाताओं को अपने साथ पूरी तरह जोड़ पाने में दिक्कत हो रही है। फिर भी भाजपा प्रत्याशी और उनके समर्थको का मनोबल काफी ऊॅचा है। उनका मानना है कि इस बार उनकी लड़ाई पिछली बार से कुछ अधिक आसान हो गई है। परन्तु वास्तविक स्थिति इससे काफी भिन्न लगती है। क्योंकि अन्दर–अन्दर उनके अपने कार्यकर्ता तथा कुछ परम्परागत वोटर अभी भी उनसे छिटके हुए है। इस बात को वे मानने को तैयार नहीं हे। लेकिन राजनीतिक प्रेक्षकों तथा दूसरे तटस्थ लोगों की बात माने तो भाजपा ने अपने मतों तथा कार्यकताओं को समय रहते नहीं जोड़ा तो चुनाव परिणाम चौकाने वाला हो सकता है जिस बात को गौर के समर्थक मानने को तैयार नहीं है। उधर राष्ट्रवादी कांग्रेस के प्रत्याशी अनुग्रह नारायण सिंह के साथ क्षेत्र का मजदूर कर्मचारी तथा एक सीमा तक शिक्षक एवं मुस्लिम जिस तरह से जुड़ रहा है और अनुग्रह के तेवर भरे तर्क प्रमाण के साथ प्रचार की नीति में अपना रक्खा है उसकी काट भाजपा के पास नहीं है। यह स्थिति उसके लिए घातक सिद्ध हो सकती है। दूसरी ओर कांग्रेस के अशोक बाजपेयी ब्राहमणों में दरार डालने में कहॉ तक सफल होते है इस पर भी चुनाव परिणाम की तस्वीर बदल सकती है। बसपा के अजय श्रीवास्तव भी थोड़ा बहुत कायस्थ मतों मे बटवारा कर रहे है तो अपना दल सपा के यादव मतों में विभाजन की स्थिति पैदा करने में लगा है।

शहर दक्षिणी से लगातार चार प्रतिनिधित्व करने वाले पं0 केशरी नाथ त्रिपाठी जो विधी वेत्ता भी है। इस क्षेत्र से पांचवी बार अपना भाग्य आजमा रहे है। उनका चुनाव अब तक अपने ही लोगों के छिटपुट विरोध के बावजूद निष्कंटक रहा। सपा ने इस बार श्यामाचरण गुप्त को उतारकर भाजपा को चुनौती देनी चाही है। व्यक्तिगत तौर पर भले ही श्यामाचरण गुप्त, पं0 केशरी के सामने बौने लगे किन्तु सपा एवं वैश्य समाज के नाते वह भाजपा के लिए संकट बन गये है। वैश्य समाज जनसंघ काल से एकमुश्त जुड़ा रहा है और भामाशाह की भूमिका निभाता रहा है। इस बार वह भाजपा के खिलाफ खड़ा है। हांलाकि व्यवसायी वर्ग अब भी बड़ी संख्या में भाजपा के साथ जुड़ा है लेकिन इसे तोड़ने के लिए सपा तरह–तरह के हथकंडे अपना रही है। भाजपा प्रत्याशी पूरी तरह इस पर नजर रक्खे हुए है। वह अपने प्रचार में सपा प्रत्याशी की वैश्य समाज निष्ठा को अपने तरीके से रेंखाकित भी कर रहे है। लेकिन जातीय नशा अब भी हावी नजर आ रहा है। इसी जातीय गणित को विगाड़ने के लिए कांग्रेस ने वीरेन्द्र मोहिले को चुनाव मैदान में उतारा है। इनके साथ केशरी जी के पुराने प्रतिद्वदी सत्यप्रकाश मालवीय भी लगे है। इनका प्रयास है कि ब्राहमण, सिन्धी तथा पंजावियों के मतों में सेंध लगाई जाय। वह इस मकसद में कहा तक कामयाब हो जायेगें यह कह सकना कठिन हैं। परन्तु ये दोनों भाजपा के मतों में ही विभाजन कर रहे है। दूसरी ओर बसपा ने मुस्लिम विरादरी के सईद अहमद को बनाकर सपा के वोट बैंक में सेंधा लगा रही है, तो अपना दल भाजपा के निषाद मतों मे विभाजन कर रहा है।

इससे स्थिति यह बन गई है कि भाजपा तथा सपा में यहॉ सीधी टक्कर हो रही है। अब देखना यह है कि केशरी नाथ त्रिपाठी मतों का विभाजन कहॉ तक रोक पाते है। अब तक उन्हें भाजपा के परम्परागत वोट किसी भी तरह मिल ही जाते थे परन्तु इस बार थोड़ा परिवर्तन नजर आ रहा है। लेकिन केशरी जी के समर्थको का मानना है कि जीत पक्की है चाहे जीतने का अन्तर कम हो जाय। उनको ऊचे कद का लाभ मिल रहा है।

शहर पश्चिमी विधानसभा को अपना अजेय दुर्ग मानने वाले अपना दल के प्रदेश अध्यक्ष अतीक अहमद अपने व्यक्तिगत रैब दाब के चलते अभी तक इस क्षेत्र से विधायक चुने जाते रहे है। पिछली बार तो वे सपा के साथ थे। लेकिन इस बार नये समीकरण को बना कर चुनाव मैदान में आये है। अपना दल का अध्यक्ष होने लाभ उन्हें एक सीमा तक पटेल मतों को अपने पक्ष में करने में मिलेगा। किन्तु सपा के गोपालदास यादव अतीक अहमद को कड़ी चुनौती दे रहे है। वे अपनादल के मुस्लिम वोट बैंक में भारी उलट भेर कर रहे है। बसपा ने कुशवाहा विरादरी के अमरनाथ मौर्या को उतारकर सपा तथा अपनादल दोनों के वोट बैंक में सेध लगा रहा है। कांग्रेस के विरेन्द्र सोनकर अपने विरादरी तक ही सीमित हो गये है। भाजपा प्रत्याशी लक्ष्मीशंकर ओझा चढ़ने के बावजूद तीसरे स्थान पर रहेगे। उनके कार्यकर्ता हिन्दु–मुस्लिम के नाम पर वोट मांग रहे है। किन्तु यह असम्भव सा लगता है।

अभी तक जो तस्वीर इस क्षेत्र की उभरी है। उससे यह स्पष्ट हो रहा है कि यदि मुस्लिम मतदाता अतीक से अधिक संख्या में नही कटा तो एक बार पुनः उन्हें विजय श्री मिलेगी। इसे रोकने के लिए सपा प्रत्याशी गोपालदास यादव पूरे दम–खम से लगे है। वास्तविक स्थिति चुनाव परिणाम आने के बाद ही सामने आयेगी।

चुनाव धीरे–धीरे नजदीक आ रहा है। सभी पार्टिया अपने–अपने झूठे, कोरे घोषणा–पत्र कोलेकर चुनावी समर में जी–जान से कुर्सी की मलाई चखने के लिए कूद पड़ी है। सबका कहना हम अवश्य जीतेगें। एक बार हमें चून लीजिए आपके क्षेत्र में विकास की झड़ी लगा देगे। सड़को की जाल बिछा देगे, बिजली की रोशनी से चकाचौध कर देगें, स्कूलों की लाइन लगा देगें, पानी के लिए नलकूपों का जंजाल फैला देगे इत्यादि। ये हमारी टीम का नहीं बल्कि हमारे प्रत्याशियों का कहना है।

हमारी विश्व स्नेह समाज की पत्रिका की सर्वे टीम में प्रधान संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवदी के नेतृत्व में विधानसभा वार एक सर्वे करवाया जिसमें सहायक संपादक रजनीश तिवारी, सहयोगी ज्ञानेन्द्र सिंह, राकेश तिवारी, मु0 तारिक ज्या, सोशन एलिजाबेथ पी0आर0सिंह आदि ने विभिन्न क्षेत्रों में जाकर लोगों के विचार जाने। विधानसभा वार सर्वोक्षण निम्न प्रकार है।

शहर दक्षिणी विधान सभा, इलाहाबाद

पं0 केशरी नाथ त्रिपाठी की जीत सारे समीकरण गड़बड़ाने के बावजूद जीत सकते है मगर अन्तर बहुत कम होगा..............

शहर दक्षिणी की तमाम अटकालबाजियों के बीच यह साबित हो रहा है कि यहॉ मुख्य लड़ाई भाजपा, सपा एवं अपना दल में रहेगी। बाकी पार्टिया बसपा, काग्रेंस लड़ाई के बाहर रहेगी। अपना दल प्रत्याशी भाजपा व सपा दोनों का ही वोट पायेगे। अपना दल के साथ निषाद, मुस्लिम व कुर्मी वोट विशेषकर है। कुछ अन्य जातियों के वोट भी मिल सकते है।

चुनावी सर्वेक्षण 2

प्रत्याशियों का क्या है कहना?

मैंने क्षेत्र का बहुमुखी विकास किया है:

पं0 केशरी नाथ त्रिपाठी, भाजपा

वकील के रुप में अपनी ख्याति बना चुके पं0 केशरी नाथ त्रिपाठी जनसंघ के समय से ही भाजपा से जुड़े रहे है। संविधान और चुनाव याचिकाओं के विशेषज्ञ के रुप में देश भर में ख्याति रखने वाले श्री त्रिपाठी के राजनीतिक जीवन की शुरुआत 1977 मे मेयर के चुनाव से हुई थी। इस चुनाव में वह रामजी द्विवेदी से मात्र 10 वोट से हार गये थे। सन् 1977 में झूसी विधानसभा क्षेत्र से और 1989 से शहर दक्षिणी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे है।

उनका कहना है कि मेरी जीत पक्की है। मैंने क्षेत्र का बहुमुखी विकास किया है। मेरी मुख्य लड़ाई सपा से है। चुनाव जीतने के बाद इलाहाबाद की गरिमा वापस दिलाने, उद्योग व्यापार की स्थापना, विकास की गति और तेज करने का पूर्ण प्रयास करूॅगा।

परिवर्तन आवश्यक है, परिवर्तन होने से विकास बढ़ेगा ?

:परशुराम निषाद, अपना दल

1984 में राजनीति मे बहुजन समाजवादी पार्टी में आए। तब से अब तक बी.एस.पी. थे। 1996 में करछना विधानसभा क्षेत्र से रेवती रमण सिंह के खिलाफ बीएसपी से ही चुनाव लड़ चुके परशुराम निषाद वर्तमान में बीएसपी को छोड़कर अपना दल ज्वाईन कर चुके है। उनका कहना है कि बी.एस.पी. की सभी जातियॉ कुर्मी, निषाद, पासी व अति पिछड़ी जातियॉ अपना दल में आ गयी हैं। मूलायम और मायावती के पैसा लेकर टिकट देने की प्रवृत्ति से कार्यकर्ता बहुत नाराज है। मुस्लिम मायुस नजर आ रहा है।

भाजपा के वर्तमान विधायक के शासन काल में कोई विकास कार्य नहीं हुआ है। कुछ गांवों मे तो अभी जाने की सड़के तक नहीं है। जैसे जमोली, चम्पत पूर, बरमार, लवायन कला, महेवा आदि। महेवा मे तो पानी निकासी की व्यवस्था ही नही है। चुनाव जीतने पर सड़क बिजली व पानी की समस्या पर विशेष ध्यान दूॅगा। नैनी रेलवे क्रांसिग पर ओवर ब्रिज के लिए प्रयास करुंगा।

भाजपा निवर्तमान विधायक के कार्यकाल में केवल उनके कास्ट के लोगों का विकास हुआ है। वह पिछड़ी जाति के निषाद, मुस्लिम बहूल क्षेत्र में कोई कार्य नहीं किये है।

मेरा सीधा मुकाबला भाजपा से है: श्यामा चरण गुप्त, सपा

एक प्रसिद्ध बीड़ी उद्योग पति एवं इलाहाबाद के मेयर रहे श्री श्यामारण गुप्त लम्बे अरसे तक भाजपा से जुड़े रहे। भाजपा से मोहभंग होने पर सपा के टिकट पर बांदा और इलाहाबाद संसदीय सीट से चुनाव लड़े लेकिन असफल रहे। यह उनका पहला विधानसभा चुनाव ह उनका कहना हे कि भाजपा सरकार ने किसी भी वर्ग का कल्याण नहीं किया है। इससे आम जनता नाराज है। मुझे हर वर्ग का समर्थ न मिला रहा है। मेरी जीत सुनिश्चत है।

चुनाव जीतने पर मैं कानून में संशोधन कराके व्यापारियों को इंसपेक्टर राज से मुक्ति दिलाने, ठप विकास कार्य को फिर से शुरु करने, खाद पानी, बिजली, जैसी मूलभूत सुविधायों को दिलाउगा।

सर्वण पूरी तरह मेरे साथ है : अखिलेश मिश्रा, मनुवादी पार्टी

मनुवार्दी पाटी के प्रत्याशी अब तक कांग्रेसी रहे अखिलेश मिश्रा का कहना है कि मेरे साथ पूरे सवर्ण मतदाता है। मेरी जीत पक्की है।

आरक्षण का विरोध, पदोन्नति में आरक्षण का खात्मा आदि मेरे चुनावी नारे है। उनका कहना है कि अब तक सवण्र मतदाताओं ने अपना मत विश्वासघाती सवर्ण नेताओं को दिया है।

शहर उत्तरी, विधानसभा

मुख्य लड़ाई भाजपा, बसपा एवं अपनादल में.................शहर उत्तरी विधान सभा क्षेत्र में समीकरण कब किस करवट लेगा कहना बहुत ही मुश्किल है। मतदाता अभी खामोश है लेकिन इतना तो तय है कि मतदाता अब परिवर्तन चाहते है। निवर्तमान विधायक एवं कैबिनेट मंत्री नरेन्द्र सिंह गौण से यहाॅ की जनता खुश नहीं है। इस क्षेत्र में मुख्य लड़ाई भाजपा, बसपा और अपना दल में होगी। कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस भी लड़ाई में आने को आतुर है। लेकिन समय आगे किस करवट लेगा अभी कुछ कहा नहीं जा सकती है। जहाॅ बसपा और सपा कायस्थ वोट बैंक को अपनी तरफ मोड़ने का प्रयास कर रही है। कायस्थ वोट ही सपा और बसपा को आगे लाने में मुख्य भूमिका अदा करेगे। लेकिन इतना तो तय है कि नवजवानों का हूजूम जहाॅ अजय श्रीवास्तव के साथ है तो कुछ अनुग्रह नारायण सिंह के साथ। लेकिन ज्यादा तर क्षेत्रो कें नवयुवक अजय श्रीवास्तव के साथ है। कुछ क्षेत्रों मे अपना दल के नेता नरेन्द्र सिंह यादव भी युवाओं को जोड़ने में सफल होगे।

मेरे साथ सभी जातियाॅ हैः अजय श्रीवास्तव, (बसपा)

छात्र जीवन से ही राजनीति में रहे व्यवसायिक श्री अजय श्रीवास्तव पहले कांग्रेस में गये। पिछले चार साल से बसपा से जुड़े हे। पार्टी में संगठन मंत्री, कोषाध्यक्ष तथा शहर प्रभारी रह चुके।

इनका कहना है कि मेरी मुख्य लड़ाई भाजपा से है। उनका कहना है कि मेरे साथ सभी जातियें और विशेषकर कायस्थ मतदाता मेरे साथ है।

उनका कहना है कि चुनाव जीतने पर बेरोजगारी दूर करने के लिए लघु उद्योग स्थापित करेंगे एंव सवर्ण जाति के निर्धन लोगों को आरक्षण दिलाने के लिए संघर्ष करूगां। श्री श्रीवास्तव ने कहा कि बेरोजगारों को समूह ग की नौकरी का झांसा देकर बेवकूफ बनाया गया। नौजवान नौकरी के लिए मारे–मारे फिर रहे है। बहन मायावती के कार्यकाल में जो विकास के कार्य हुए थे, वे ठप पड़े है। वर्तमान विधायक एवं कबीना मंत्री नरेन्द्र सिंह गौण ने उत्तरी का एक भी विकास कार्य नहीं हुए है। विकास कार्य केवल कागज पर हुआ है। उनके पास सिर्फ शिलापट्ट पर अपना नाम लिखवाने के अलावा कोई काम नहीं रह गया है। भरद्वाज आश्रम, शिवकुटी,मंदिर पार्क, तेलियरगंज, त्रिलोकनाथ मंदिर, पंडिला महादेव मंदिर, श्रृगवेरपुर धाम एवं उत्तरी क्षेत्र के अन्य धार्मिक स्थल आज भी पूरी तरह से उपेक्षित पड़े है।

मायावती ने अपने मुख्यमंत्रीत्व काल में कायस्थ परिवारों के उत्थान के लिए मुंशी काली प्रसाद के सपनों को साकार करते हुए के पी कालेज के प्रांगण में दस लाख का अनुदान दिया तथा कायस्थ समुदाय को यह संदेश दिया।

मा0 कांशी राम जिन्दाबाद **बहन मायावती जिन्दाबाद**

ftlch ftruh la[;k Hkkjh
mldk mruh Hkkxhnkjh

इलाहाबाद शहर उत्तरी
विधान सभा प्रत्याशी
चुनाव चिन्ह

श्री अजय श्रीवास्तव का चुनाव चिन्ह **हाथी** पर बटन दबाकर भारी मतों से विजयी बनायें।

निवेदक : **प्रतिमा श्रीवास्तव**, संयोजक महिला संगठन
कमलेश श्रीवास्तव, अध्यक्ष, भारतीय सृजन चेतनामंच
एवं समस्त नागरिक शहरी उत्तरी, इलाहाबाद

usrkvksa dh Hkh vk;q lhek fu/kkZj.kgks

अपना दल के शहर उत्तरी के प्रत्याशी नरेन्द्र कुमार सिंह यादव जो कि अपना दल के शहर उत्तरी विधान सभा से उम्मीदवार है का कहना है कि यादव, कुर्मी, मुस्लिम व युवा वर्ग पूरी तरह मेरे साथ है। मैं जीत पक्की है। उनका कहना है कि हर प्रकार के नेताओं के लिए आयु सीमा का निर्धारण होना चाहिए। इसका युवा वर्ग काफी समर्थन कर रहा है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पाश्चात्य कालीन परम्परा की शुरुआत करने पर विश्वविद्यालय में भाजपा एव सपा के प्रत्याशी नहीं आए। यह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों की तौहिन है। चुनाव जीतने पर क्षेत्र की बुनियादी समस्याओं पर विशेष ध्यान देगे।

डा0 सोने लाल पटेल **अतीक अहमद जिन्दाबाद**

bykgkckn 'kgj mRrjh fo/kku lHkk {ks= ls

अपना दल

के उम्मीदवार

चुनाव चिन्ह

नरेन्द्र कुमार सिंह यादव

को चुनाव निशान **ताला चाभी** के सामने वाली बटन दबा कर भारी मतों से विजयी बनाएँ।

निवेदक : शहरी उत्तरी के मतदाता

मेजा विधानसभा

पूर्व विधायक राजबली जैसल मुख्य लड़ाई में?

इलाहाबाद के इस सुरक्षित विधानसभा के सुरक्षित होने के कारण महत्व कम हो गया है। यहां पिछड़ी जाति तथा सवर्ण मतदाताओं में चुनाव को लेकर कोई खास दिलचस्पी नहीं है। यहां सभी पार्टी के प्रत्याशियों का आंकड़ा, चुनावी गणित क्षेत्र के आधार पर बटा हुआ है। जो प्रत्याशी जिस क्षेत्र का है उस क्षेत्र के मतदाता उसके साथ है। हमारी टीम ने सभी क्षेत्रों मे सर्वे किया। सर्वे में यह परिणाम निकला कि यहां वर्तमान विधायक एवं कम्युनिष्ट एवं लोकमोरचा के संयुक्त उम्मीदवार रामकृपाल से यहां की जनता नाराज है। यहॅा अपना दल प्रत्याशी राजबली जैसल के पूरानें कार्यकाल को देखते हुए सभी विरादरी के वोट मिलने की सम्भावना नजर आ रही है। हालांकि सभी पार्टियों के प्रत्याशी अपनी मूख्य लड़ाई निवर्तमान विधायक से ही मान रहे है। लेकिन मुख्य लड़ाई रामकृपाल, अपना दल प्रत्याशी एवं पूर्व विधायक जैसल में ही होगी। कांग्रेस, भाजपा एवं बसपा तीसरे स्थान के लिए लड़ रही है।

करछना विधानसभा

सपा और अपना दल मुख्य लड़ाई में.

यहॅा यह साबित होता है कि यहां सभी पार्टिया समाजवादी पार्टी के कुंवर रेवती रमण सिंह से लड़ रही है। मुख्य प्रतिद्वंदी के लिए कई समीकरण है–यहॅा अपना दल के दयाशंकर यादव व कुंवर रेवती रमण सिंह के बीच लड़ाई हो सकती है। वैसे दूसरा समीकरण यह कहता है कि अपना दल के दयाशंकर यादव और भाजपा के निरजंन उपाध्याय के बीच मुख्य लड़ाई होगी। अपना दल के साथ यादव, मुस्लिम, कुर्मी विरादरी का तो वोट पूरा –पूरा मिल ही रहा है अन्य विरादरीयें का भी वोट मिल रहा है।

हम बुनियादी समस्याओं पर विशेष ध्यान देगे?

jktcyh tSly] iwoZ fo/kk;d izR;k'kh] fo/kkulHkk {ks=] estk] bykk0

समाजवादी पार्टी एवं बी.एस.पी. के संयुक्त प्रत्याशी के रुप में एक बार 18 महीने तक विधायक रह चुके तथा कुछ दिनों पहले सपा छोड़कर अपना दल में शामिल हो चुके राजबली जैसल मेजा सु0 से अपना दल के उम्मीदवार है। उनका कहना है कि निवर्तमान विधायक एवं लोकमोरचा के संयुक्त उम्मीदवार रामकृपाल खुद सुरक्षित नहीं है तो जनता कहॅा से सुरक्षित रहेगी। उनके साढ़े पॉच वर्ष के कार्यकाल में कोई विकास कार्य नहीं हुआ। पूरे कार्यकाल में केवल एक दो जगह मिट्टी की सड़के बनी हैं वह भी अस्थायी। यहॅा तक कि विधायक फंड का 97 लाख रुपया वापस चला गया। उनके कार्यकाल में केवल दो लोगों का विकास हुआ है एक वर्तमान विधायक और दूसरे उनके नेता पाण्डेय जी। उनके कार्यकाल में कोल विरादरी पर भी पुलिसिया जूल्म ठाहे गये, वह भी उनके कारण।

उनका कहना है कि मुझे सारी विरादरीयों का वोट मिलेगा। सपा के भी कार्यकर्ता पूरी तरह मेरे साथ है। मुझे ब्राहमण, ठाकुर, यादव, मल्लाह, यादव, पाल और कौल विरादरी के वोट भी मिलेगे।

आपकी लड़ाई किससे है पूछने पर उन्होनें कहा कि मेरी लड़ाई किसी से नही है, सब मुझसे लड़ रहे है।

क्या आप आपके पूर्व के कार्यकाल से जनता संतुष्ट है?

हॅा, मेरे पूर्व के कार्यकाल से जनता पूरी तरह संतुष्ट है। मेरे कार्यकाल में अन्याय व अत्याचार बिल्कुल नहीं हुआ। मैने प्रत्येक क्षेत्र में विकास कार्य किया था। सड़क, बिजली, पेयजल की समस्याओं पर ध्यान दिया। मैं सप्ताह में एक दिन जनता के लिए मेजा में बैठता था चाहे मैं कही भी रहूँ।

अगर आप चुनाव जीते तो क्या करेगे?

मैं पक्की सड़के, विद्यालय, पेयजल व बिजली की समस्या पर विशेष ध्यान दूंगा। कुछ उद्योग भी लगवाने का प्रयास करुँगा। जिससे क्षेत्र की जनता को रोजगार मिल सके।

लेकिन अगर आपकी पार्टी सरकार में नहीं रही तो आप कहॅा से यह सब करेगे?

कोई भी सरकार बिना अपना दल के सहयोग के बन ही नही सकती। और जब सरकार बनेगी तो हम अपना पूरा कार्य करवा लेगें।

डा0 सोने लाल पटेल अतीक अहमद जिन्दाबाद

'kgj nf{k.kh fo/kku lHkk {ks= ls

अपना दल

के उम्मीदवार

चुनाव चिन्ह

परशुराम निषाद

को चुनाव निशान ताला चाभी के सामने वाली बटन दबा कर भारी मतों से विजयी बनाएँ।

निवेदक : मेजा के मतदाता

डा0 सोने लाल पटेल अतीक अहमद जिन्दाबाद

estk fo/kku lHkk {ks= ls

अपना दल

के उम्मीदवार

चुनाव चिन्ह

भाई राजबली जैसल

को चुनाव निशान **ताला चाभी** के सामने वाली बटन दबा कर भारी मतों से विजयी बनाएँ।

निवेदक : मेजा के मतदाता

शहर पश्चिमी विधानसभा क्षेत्र

सपा के उम्मीदवार गोपालदास यादव व अद के अतीक अहमद के बीच मुख्य लड़ाई

क्षेत्र के तमाम नागरिकों और प्रत्याशियों का कहना है निवर्तमान विधायक ने कोई विकास का कार्य नहीं किया हैं। उनके कार्यकाल में केवल अत्याचार व अन्याय बढ़ा है। क्षेत्र के पिछड़ेपन के लिए वर्तमान विधायक को दोषी मानते है। यहॉ सर्वेक्षण में यह बात साबित होती है कि यहां मुख्य लड़ाई सपा एवं अपनादल में ही होगी। भाजपा, कांग्रेस व बसपा तीसरे स्थान के लिए लड़ रही है। जहां अपनादल के विधायक अतीक अहमद मुस्लिम व कुर्मी वोट बैंक के सहारे है वहीं गोपालदास यादव को सपा के यादव के साथ –साथ मुस्लिम वोट भी बड़े पैमाने पर मिलने की उम्मीद है। इस क्षेत्र के अन्य जातियों के मतदाता भी पार्टियों को छोड़कर गोपालदास यादव के पर्सनल व्यक्तित्व के कारण उनके साथ नजर आ रही है।

चुनाव लड़ने का मुख्य उद्देश्य जनता की सेवा करना हैः

xksiky nkl ;kno] lik

पूर्व में विधायक रहे एवं वर्तमान में शहर पश्चिमी विधानसभा क्षेत्र से समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार गोपालदास यादव काफी मिलन सार व्यक्तित्व के धनी है। उनका कहना है कि वे जनता की सेवा करने के लिए चुनाव लड़ रहे है। पिछले बारह साल से शहर का कोई भी नेता क्षेत्र की जनता का दुख दर्द पूछने नहीं आया। इस क्षेत्र में कोई भी डिग्री कालेज नहीं है, न तो पेयजल की व्यवस्था है। उनका कहना है कि अगर मुझे पॉच साल कार्य करने का मौका मिला तो क्षेत्र में मैं दूषित पेयजल की समस्या से निजात, देहाती इलाकों में शौचालय की व्यवस्था, खेलने के लिए स्टेडियम, विज्ञान के इंटर एवं डिग्री कालेज का निर्माण पर विशेष ध्यान दूंगा।

मुझे सभी जाति एवं धर्मो का वोट मिलेगा। मुस्लिम भी पूरी तरह मेरे साथ है।

बारा विधानसभा क्षेत्र, इलाहाबाद

बारा क्षेत्र की 12 वर्षो की सर्वागीण बर्बादी को सर्वागीण विकास में बदलना : शेखर बहुगुणा, कांग्रेस

पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय हेमवती नंदन बहुगुणा के पुत्र श्री शेखर बहुगुणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री भी है। 1991 में इस क्षेत्र से चुनाव एक बार लड़ चुके है। लेकिन मतदाताओं ने उनका साथ नहीं दिया। उनका कहना है मेरा चुनाव लड़ने का मुख्य उद्देश्य पिछले 12 वर्षो में क्षेत्र की जो सर्वागीण बर्बादी हुई है उसको सर्वागीण विकास में बदलना है तथा अपने पिता के सपनों को पूरा करना। मैं चाहता हुं कि मैं भी उसी तरह पहचाना जाऊॅ जैसे मेरे पिता की पहचान थी।

इस क्षेत्र में जो भी विकास कार्य मेरे पिता जी ने करवाये थे वे सभी वैसे ही अधूरे पड़े है। मेरे पिता जी के कार्यकाल में जो बार सुन्दर व स्वच्छ था वह बर्बाद हो चुका है। वहॉ कानून नाम का कोई भी चीज नहीं रह गया है। मैं जाति धर्म के नाम पर वोट नहीं मांगूगा। मुझे हर वर्ग व हर जाति का वोट मिलेगा। जाति का सहारा वो लोग लेते है जो कायर होते है।

मेरी मुख्य लड़ाई किसी से नहीं है सबकी लड़ाई कांग्रेस से है। चुनाव जीतने पर आपकी प्राथमिकता क्या रहेगी पूछने पर कहते है कि मेरी प्राथमिकता सर्वागीण विकास, कानून का राज्य स्थापित करना।

अपील

तिलक तराजू कलम तलवार, कब तक सहोगे अत्याचार डालने के पहले अपना मत, सन लो मनुवादी पार्टी की बाते चार

1. अब सवर्ण मतदाताओं ने विश्वासघाती सवर्णो को वोट दिया जिन्होंने कभी 21प्रति0 तो कभी 27 प्रति0 तो 90वां संविधान संशोधन कर 100 प्रति तक आरक्षण लागू करा दिया। सवर्ण नेताओं ने ही सवर्णो का गला काट दिया। क्या आप इन्हें वोट देने जा रहे हे।

2. न्यूनतम अंक पाने वाले को नौकरी, अधिकतम अंक पाने वाले सवर्ण को बेरोजगारी। सवर्ण टॉपर छात्र दर बदर भटकने को विवश। प्रोन्नति में आरक्षण के चलते अयोग्यता, योग्यता पर हावी। हरिजन बनाम् सवर्ण एक्ट में फर्जी फॅसना एंव दलितों से डरना।

गर न बचा पावोगे पुरुषों की विरासत को
अगली बरसात में दीवार भी ढह जायेगी।

आपका मनुवादी सिपाही **शहर दक्षिणी के प्रत्याशी** अखिलेश कुमार मिश्रा

चुनाव चिन्ह **स्याही की दवात।**

डा0 सोने लाल पटेल अतीक अहमद जिन्दाबाद

djNuk fo/kku lHkk {ks=ls

अपना दल

के उम्मीदवार

चुनाव चिन्ह

भाई दयाशंकर सिंह यादव

को क्षेत्र समुचित विकास के लिए चुनाव निशान **ताला चाभी** के सामने वाली बटन दबा कर भारी मतों से विजयी बनाऍ। निवेदक : करछना के मतदाता

गोरखपुर मंडल, चुनावी सर्वेक्षण,

पिछले चुनाव में गोरखपुर मंडल मे सर्वाधिक दस सीटें हासिल करने वाली भाजपा इस बार मुश्किल में फंसी हुई है। गठबंधन सरकार में शामिल रहे इस मंडल के नौ मंत्रियों में से एक ने उसका साथ छोड़ दिया है जबकि शेष सात अपने–अपने क्षेत्रों में या तो असंतुष्टों स जूझ रहे है या भितरघात उन्हें राहु की तरह डंसे हुए है। कुल मिलाकर विधानसभा तक पहुंचने का उनका रास्ता कठिनाइयों से भरा है।

सलेमपुर विधानसभा क्षेत्र, देवरिया

सलेमपुर विधानसभा क्षेत्र में गठबन्धन के उम्मीदवार हरिकेवल जो पूर्व सांसद भी रह चुके है, और बसपा की गज़ला लारी पूर्व विधायक मुराद लारी की पत्नी मुख्य लड़ाई में है। जहॉ हरिकेवल की राजनीतिक कद–काठी काफी मजबूत है वहीं बसपा उम्मीदवार गजला लारी अभी राजनीति में पहली बार जोर आजमाईश कर रही हैं। कांग्रेस एवं सपा के उम्मीदवार मुख्य लड़ाई में आने को आतुर दिख रहे है।

बरहज विधानसभा क्षेत्र, देवरिया

बरहज विधान सभा क्षेत्र जो बाबा राघव दास की तपस्थली रही है। यहॅा राजनीतिक हलचल स्वतंत्रता के समय से ही कुछ ज्यादे ही रही हैं। वर्तमान चुनाव में यहॉ से निवर्तमान विधायक एवं सहकारिता राज्य मंत्री प्रेम प्रकाश सिंह राजग से उम्मीदवार है। जो कि अपनी राजनीति कांग्रेस से शुरु कर बसपा के रास्ते भाजपा का दामन थामे है। जिनको भाजपा के बागी पूर्व विधायक दुर्गा प्रसाद मिश्र कड़ी चुनौती दे रहे है। इन्होनें सभी पार्टियों की नींद हराम कर दी है। जहॉ राजग गंठबन्धन के साथ भाजपा के परम्परागत वोट बैंक है तो दूर्गा प्रसाद मिश्र के साथ सभी जातियों मतदाता है। उनके साथ धनबली जे0पी0 जायसवाल और जिला पंचायत अध्यक्षा कृष्णा जायसवाल भी जी जान से जुटी हुई है। यहॉ सपा के उम्मीदवार एवं पूर्व विधायक स्वामी नाथ यादव जहॉ अपने यादव विरादरी के बल पर जोर आजमाईश कर रहे है वहीं बसपा के उम्मीदवार रामप्रसाद जायसवाल अपने धन–बल और बसपा के परम्परागत वोट बैंक के भरोसे चुनाव लड़ रहे है। कांग्रेस के उम्मीदवार कैलाश सिंह भी अपने को आगे लाने के लिए जीजान से जुटे हुए है।

✍ गिरिराज दूबे, व्यूरो गोरखपुर

वाराणसी मंडल

कुल 28 विधानसभा सीटों वाला यह मंडल वाराणसी पूर्वांचल की नब्ज माना जाता है। पिछले विधानसभा चुनाव में बारह सीटें जीतकर सपा यहां सबसे आगे थी तथा भाजपा ग्याहर सीटें जीतकर दूसरे स्थान पर रही। बाद के उपचुनावों में सपा ने अपनी सीटे बसपा और भाजपा के हाथो गंवा दी। लेकिन अभी तक जो माहौल बना है उनमें भाजपा अपनी जीती हुई सीटों पर अच्छी स्थिति में नहीं दिखती। लेकिन उसे कुछ नयी सीटें मिलने की उम्मीद है। सपा के जनाधार में पिछले पांच साल में कई समीकरण बदल चुके है। उसके इस बार भाजपा से बेहतर करने की संभावना बन रही है। किंतु उसे बहुत बड़ी सफलता मिलने की उम्मीद नहीं है। इन दो दलों को बसपा तथा अपना दल जैसी पार्टिया कई सीटों पर प्रभावित कर सकती है। बसपा को 96 के चुनाव में मंडल में तीन सीटें मिली थी। किंतु कई स्थानों पर वह दूसरे स्थान पर थी। बसपा ने इस बार 28 में से 9 सवर्ण तथा इतनी ही सीटो पर पिछड़ी जाति के दंबगों को टिकट दिया है।

कुर्मी–मुस्लिम वोटों का तेजी से नया ध्रुवीकरण खड़ा कर रहे है। अपना दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनेलाल पटेल भी वाराणसी मंडल की कोलअसला सीट से चुनाव लड़ रहे है। इसके अलावा प्रदेश सरकार के मंत्री, हरिश्चन्द्र, महेन्द्र पाण्डेय, कल्याण सिंह की चहेती कुसुम राय भी गाजीपुर जिले के दिलदार नगर सीट से मैदान में जोर आजमाईश कर रही है। पिछले चुनाव में एक सीट वाली कांग्रेस वही तक सीमीत रहेगी।

"सांसदम् व विधायकम्"

अमित कुमार 'पुजारी'

सांसदम् विधायकम् देश बेच खायतम्

नमामि दुखदायकम् सांसदम् विधायकम्।

अमीर वर्ग मोचनम् गरीब वर्ग नोचनम्

सदैव बंद लोचनम् देशहित न सोचनम्।

हॅाथ जोड़ आयतम् योजना सुनायतम् और वोट पायतम्

फिर कभी न आयतम् और सब भुलायतम् सांसदं विधायकम्।

देश बेच खायतम् छल कपट उपासकं

एकता विनाशकं सांसदम् विधयकम्।

सदा असत्य भाषकं राम राज नाशकम्।

दंद फंदनायकं सांसदम् विधायकम्।

दुर्जनं सहायकं सज्जनं विनाशकम्।

हरामी दुःख दायकं सांसदम् विधायकम्।

मुलायम सिंह यादव जिंदाबाद समाजवादी पार्टी जिदाबाद

bykgkckn 'kgj if'peh fo/kku lHkk {ks= ls

समाजवादी पार्टी

के उम्मीदवार

चुनाव चिन्ह

भाई गोपाल दास यादव (पूर्व विधायक)

को जनकल्याण एवं अत्याचार के खातमें के लिए चुनाव निशान साईकिल पर के सामने वाली बटन दबा कर भारी मतों से विजयी बनाएॅ।

निवेदक : शहर पश्चिमी के मतदाता

कामचर्या

डॉ0 जीवन लाल गुप्त
रिटायर–जालॉजी प्रोफेसर
सी0एम0पी0 डिग्री कॉलेज

जब भी आप किसी सफल व्यक्ति से मिलें और पूछें कि उसने अपने छोटे से जीवन में इतना अधिक काम कैसे किया? तो जो भी वह बताते हैं उससे तो नहीं लगता कि उनके पास कोई ऐसी वैज्ञानिक तकनीक रही हो; बल्कि कुल मिलाकर एक ही निष्कर्ष निकलता है कि उनके पास एक ही व्यवहारिक ज्ञान जरूर रहा है, जिसने उनका साथ दिया।

.........अगर आप चाहें तो वह नुस्खे सरीखीं बातें आप भी अपना सकते है।

........उनमें से कुछ निम्न है–

अधिक काम कैसे करें?

१.बस शुरु कर दीजिए– पहला कदम यह है कि बस शुरू कर दीजिये। और दूसरा भी वही है। इनमें से पहला सबसे कठिन होता है; जैसे पैराशूट से कूदना, मार्कटविन से जब पूछा गया तो अपने विनोदी अंदाज में बोले– ।चचसल जीम`मंज व लिवनत चंदजे जव जीम`मंज व जिीम बींपत.......बस सोचिये नहीं, बैठ जाइये!

२. अपना एक प्रतिद्वन्द्वी चुन लीजिए– आप जिस क्षेत्र में काम करते हों उसमें सबसे सफल व्यक्ति को चुनिये; उसे पकडने की कोशिश कीजिये। फिर उसे पीछे छोडने की कोशिश कीजिए, जैसे जैसे वह आगे बढे बस आप होड लगा लीजिए। दोनों ही बढ जायेंगें।

३. अपने काम की लय खुद निकालिये– कितने घंटे काम? कितने घंटे आराम? कितना सोना, कितना जागना? यह सब अपने स्वभाव के अनुसार ही चुनिये। अगर रात के 3 बजे जागकर कभी काम करना अच्छा लगता है तो कीजिये न! कोई भी हर्ज नहीं!----Work at add houra and plaes-----!

४.समय सम्पदा का बजट बनाइये– मूल कार्य पूँजी समय ही होती है। देखियें इसका रिसाव कहॉ हो रहा है। इसे रोकिये, और काम की एक समय सीमा निर्धारित कर लीजिये। इस तरह बडा तो क्या आप छोटे–छोटे काम जैसे घर की सफाई बच्चों से होड लगाकर खेलखेल में कर सकते है। एक साहब रसोई के बर्तन बच्चों से होड लगा कर धोते थे। इस होड में आधे घंटे का काम सिमट कर 10 मिनट का कीर्तिमान बन गया साथ ही घर भी चुस्त–दुरूस्त हो गया।

५. ऊल–जुलूल बाते से बचे–सोचिये कि आप एक पानी के बडे से बुलबुले के भीतर बैठे हैं। बाहरी दुनिया का सारा कुछ आप को दिखाई तो देता है, लेकिन अनचाहा उस बुलबुले की दीवार से भीतर नही घुस पाता। इस तरहएकाग्रता किसी एक बिन्दु/विचार पर अपनी शक्ति का पुंजीकरण नहीं बनता बल्कि वह समग्रता का प्रसार ही बनता है जो भले–बुरे का हर पहलू परख लेता है।राजनीति, धर्म, अधर्म, युद्ध–शांति, यहॉ तक कि आदमी–आदमी के सम्बन्धों तक को वह दिशा निदेश देने लगता है! जी हॉ!! सच्चे सुन्दर गठीले, अर्थवत्तावान जीवन को भी!

६.ऊबिये तो छोडिये.... और फिर पकडिये:– जैसे किसी अपने स्नेही के पास बैठने में एक मीठे–मीठे प्रेम की गंध आती है. ..... लेकिन अधिक समय बाद वह बंद सी हो जाती है।आप उससे दूर हो जाइये और फिर पास जाइये तो वह फिर से आने लगती है;ठीक ऐसा ही हो जाता है कभी–कभी श्रृजनात्मक क्षणों में। अगर ऐसा हो तो कुछ समय के लिये वह काम छोड दीजिये, कुछ और कीजिये। जब आप दोबारा उसे पकडेंगें तो देखियेगा आनन्द भी दोगुना होगा और काम भी। बडे–बडे लेख आलेख यहॉ तक कि उपन्यास तक ऐसे लिखे गये है; चित्रकला की जान है जैसे यह नुस्खा ....आदि आदि।

७. बस खत्म कर डालियेः– किसी भी काम का होना बस एक घटना सरीखा होता है। 'Just like a happining ' तो उस होने को जीवन का एक संतोषप्रद पारितोषक बनाइये न! Just do it (JDI) (John kord lece mann के आलेख "How to get more work done" का सार संक्षेप)

हास्य कविता

,slkD;ksagksrkgS\

ट्रक का वजन टन क्यों होता है?
शर्ट में बटन क्यों होता है?
पैन्ट में चेन क्यों होता है?
फेस्टीवल में मेन की जरूरत क्या है?
पेड पर फल क्यों होता है?
खेत में हल क्यों होता है?
इन्सान पहले बच्चा क्यों होता है?
फल पहले कच्चा क्यों होता है?
दूध फटता क्यों है?
कपडा फटता क्यों है?
दॉत बत्तिस क्यों है?
ऑकडे छत्तिस क्यों हैं?
जो देगा इस क्यों का जवाब,
वही होगा इस बुद्धि का नवाब
सवालों का क्यों होता है जवाब?
क्यों बने कोई इस बुद्धि का नवाब?

रश्मी साहू

प्रायश्चित

श्रीमती जया "गोकुल"
सहा0 संपादिका : मासिक पत्रिका
"विश्व स्नेह समाज"

आज सरोज की बातें सुन पंडित दीनानाथ के पैरों तले जमीन खिसक गयी। वक्त भी कितने रंग दिखाता है, कैसे–कैसे खेल दिखाता है कि आदमी को खुद को उस रंग में रंगना ही पडता है, चाहे वह रंग देखने वालों की नज़र में भद्दा ही क्यों न हो। वक्त के अनुसार बदलने पर ही खुशी मिलती है, नहीं तो वक्त के विपरीत जाने पर सिर्फ पश्चाताप के अलावा कुछ भी हाथ नहीं लगता। आज दीनानाथ को महसूस हुआ है कि वक्त के अनुसार अगर खुद को ढाले होते तो आज ये दिन न देखना पडता। आज उन्हें इस बात पर पश्चाताप हो रहा है कि उन्होंने खुद को बदलने में इतनी देर क्यों कर दी?

आज से 10 साल पहले भी दीनानाथ के जीवन में एक ऐसा ही मौका आया था, जब उन्होंने एक अहम फैसला किया था और उसका खामियाजा आज तक भुगत रहे है। उन्होंने अपने इसी एक फैसले के कारण अपनी लाडली बहन को हमेंशा के लिए खो दिया था। इतना ही नहीं अपनी मॉ की आवाज सुनने के लिए तरस गये। इन सबके अलावा उन्होंने अपने घर की खुशी को हमेंशा के लिए खो दिया। आज भी दीनानाथ अपनी बहन रजनी की मृत्यु का कारण स्वयं को मान रहे हैं। और आज वक्त ने दुबारा उन्हें उसी मोड पर लाकर खडा किया है, जिस पर खडे होकर उन्होंने 10 साल पहले बहन के जीवन का फैसला किया था।

पता नहीं कैसा संयोग है कि कारण भी वही है, वही परिस्थितयॉ हैं जो आज से 10 साल पहले थीं। हॉ इतना अन्तर जरूर है कि उस समय उन्होंने अपनी बहन के जीवन का फैसला किया था और आज उन्हें अपनी बेटी सरोज के जीवन का फैसला करने का मौका मिला है। ठीक भी तो है, अगर उस समय उन्होंने अपने घमंड को किनारे कर, भूलकर रजनी की विनती सुन ली होती तो आज उन्हें बहन की दुआएं मिलती, लेकिन भाग्य को कुछ और ही मंजूर था।

सूरज डूबने की स्थिति में है और दीनानाथ अपने ही विचारों में खोये हुए लॉन में बैठे है।आज उन्हें 10 साल पहले का समय याद आ रहा है जब रजनी की ससुराल से खबर आयी थी कि रजनी की मृत्यु हो गयी। इतना सुनते ही रजनी की मॉ बेहोश हो गयी थीं और आज तक रजनी के गम को भूल नहीं पायी है। आज भी वो पिछले 10 सालों से एकदम खामोंश है। सदमें को न सह सकने के कारण उनकी आवाज चली गयी। सभी आज तक दीनानाथ को ही कोसते हैं कि अगर उन्हेंाने रजनी की बात मानी होती तो आज ये दिन नहीं देखना पडता। सूरज डूब चुका है और दीनानाथ निढाल से बैठे शून्य में एकटक देखे जा रहे है। यही हाल उस समय भी था, जब उन्होंने बडा भाई होने के नाते रजनी की चिता को आग लगाई थी। उस दिन घर में मनहूसियत सी छायी थी, जो कुछ अंशों में आज भी बरकरार है। आज भी वो बरामदे में बैठे अपने किये पर पछता रहे है।और उनके पास ऑसू बहाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

कितना खुशहाल परिवार था दीनानाथ का। चार भाइयों और एक बहन में दीनानाथ सबसे बडे थे और बहन रजनी सबसे छोटी थी और इसी कारण सबकी लाडली थी। पूरे मुहल्ले में सबसे धनी परिवार था पं0 दीनानाथ का। पिता का स्वर्गवास होने के बाद दीनानाथ ने रजनी को बेटी की तरह पाला था। रजनी अत्यन्त चंचल, सुन्दर और सबसे बडी बात कि भाई का आदर करने वाली लडकी थी। बहुत ही हॅसमुख थी, हमेंशा हॅसती–हॅसाती रहती थी। कभी भी दुःखी नहीं दिखती थी। उसकी हॅसी भरी बातों से पूरे घर में खुशी का माहौल व्याप्त रहता था।

सबकी लाडली रजनी युवावस्था की ओर कदम बढाने लगी थी। अब दीनानाथ ने रजनी के लिए अच्छा घर–वर खोजना शुरू कर दिया था। लेकिन रजनी के जीवन में उसके सपनों का राजकुमार आ चुका था और घरवाले इससे बेखबर थे। हिरणों सी चंचल, हमेंशा उछलकूद करने वाली रजनी में अब धीरे–धीरे गम्भीरता आनी शुरू हो गयी थी। क्योंकि उसे मालूम था कि पिता समान भइया, उसे अपने सपनों के राजकुमार ''ज्ञान'' के साथ जीवन बिताने की इजाजत कभी न देंगें। फिर भी उसने घरवालों को मनाकर अपने पक्ष में करने को सोच रक्खा था।

अब रजनी सारा– सारा दिन ज्ञान के ख्यालों में खोई रहती। हफ्ते में सिर्फ एक ही दिन ज्ञान और रजनी मिल पाते थे। क्योंकि ज्ञान दूसरे शहर में नौकरी करता था और हफ्ते में एक ही दिन घर आता था। जहॉ रजनी एक धनी परिवार से सम्बन्धित थी, वहीं ज्ञान एक मध्यम वर्गीय परिवार से ताल्लुक रखता था। पहली बार रजनी की मुलाकात ज्ञान से कॉलेज में हुई थी और वहीं से उनके प्रेम का अंकुर फूटा था। बी0ए0 पास कर ज्ञान ने एक प्राइवेट संस्था में नौकरी कर ली थी। ज्ञान पर पूरे परिवार का बोझ था इसी कारण नौकरी उसकी जरूरत थी। फिर भी रजनी और ज्ञान एक क्षण को मिलकर सारे दुःख दर्द भूल जाते थे। इसी तरह पता नहीं चलता और रजनी का वह दिन पंख लगा कर उड जाता। और अगली छुट्टी का इन्तजार शुरू हो जाता।

एक दिन रजनी अपने कमरे में लेटी ज्ञान के ख्यालों में खोयी थी कि रजनी की मॉ ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा–''रजनी बेटी. ...।'' पर रजनी तो अपने ही ख्यालों में खोयी किसी और ही दुनिया की सैर कर रही थी। मॉ ने रजनी को झकझोरा तो रजनी वर्तमान में लौटी।

''क्या हुआ मॉ''– रजनी ने चौकते हुए कहा।

''कल तुझे लडके वाले देखने आ रहे है। यही बताना था'' मॉ ने मुस्कुराते हुए कहा। मॉ की बातें सुन कर रजनी रोने लगी, यह देख मॉ को आश्चर्य हुआ। उन्होंने बडे ही लाडप्यार से रजनी के सिर को सहलाते हुए कहा–'' क्या हुआ रजनी? पर रजनी कुछ भी नहीं बोली और बस रोती रही। मॉ के काफी पूछने पर रजनी ने बताया कि उसने भी ज्ञान को वचन दिया है। और ज्ञान के बिना वह शायद ही जिंदा रहे।''

माँ ने जब रजनी की बातें सुनीं तो उन्होंने उसे बहुत ही समझाया। उन्होंने बार–बार रजनी से कहा–''तेरे भइया इसकी इजाजत कभी भी नहीं देंगें। क्योंकि हमारे और ज्ञान के स्तर में काफी अन्तर है।और फिर लोग क्या कहेंगें? हम तेरी शादी इससे भी अच्छे लडके के साथ करेंगें। लेकिन रजनी बस रोये जा रही थी। माँ और रजनी के बीच हुई बातचीत को रजनी के भइया सुन रहे थे। उन्होंने रजनी से आदेशात्मक स्वर में कहा कि तुम्हारी शादी ब्रजेश से ही होगी। कितनी विनती की थी रजनी ने, कितना रोयी और गिडगिडाई थी रजनी। पर पत्थर दिल हो चुके उसके भइया पर कोई असर न हुआ। उन पर तो पैसे का भूत सवार था। माँ ने भी दीनानाथ को काफी समझाया था, पर कोई असर न हुआ। और अन्त में रजनी दुल्हन बनकर ब्रजेश के घर और अपनी ससुराल पहुँच गयी। रजनी मजबूर थी, लाचार थी, वह कुछ नहीं कर सकती थी। लेकिन उसने भी फैसला कर लिया था कि वह ससुराल से घर वापस न जायेगी। और वह अन्तिम समय तक दुबारा मायके न गयी।

दिल पर पत्थर रखकर रजनी ने ज्ञान को भूलने की कोशिश की पर मजबूर थी। और ज्ञान की याद उसे सताती। आखिर ज्ञान उसका पहला प्यार था, भला वो उसे कैसे भूल सकती थी। फिर भी उसने खुद को काफी सम्भाला, समझाया कि अब वह ज्ञान की प्रेमिका नहीं बल्कि ब्रजेश की पत्नी है। इसलिए ज्ञान को भूलने में ही उसकी भलाई है। साथ ही रजनी को संस्कार एक भारतीय नारी के मिले थे। जिसके अनुसार उसे ज्ञान को भूलना ही था। ब्रजेश भी अपनी पत्नी को बहुत चाहता था। धीरे–धीरे रजनी ने खुद को घर के कार्यों में उलझाना शुरू कर दिया। घर के सभी सदस्य उससे खुश रहते थे। उसे इस बात से संतोष जरूर था कि अब आगे की जिन्दगी उसकी खुद की होगी और जिसके सारे फैसले उसके अपने होंगें। लेकिन अभी तो उसके जीवन को एक और तूफान से गुजरना था। उसे क्या मालुम था किउसके जीवन में आगे सिर्फ दुःख ही दुःख है। और ऐसी अनहोनी घटना घटित होने वाली थी जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी। शादी के कुछ महीनों बाद तक तो सब कुछ ठीक था और रजनी–ब्रजेश की जिन्दगी ठीक–ठाक ही चलने लगी थी।लेकिन पता नहीं किससे रजनी के पति ब्रजेश को रजनी और ज्ञान के सम्बन्धों के बारे में पता चल गया। जब ब्रजेश ने रजनी से इस विषय पर बात की तो रजनी ने उसे सब सच–सच बता दिया। उसे क्या मालूम था कि सच बोलना उसके लिए घातक सिद्ध होगा। उसे तो अपने पति पर विश्वास था कि जिसने सैकडों लोंगों के सामने उसका साथ निभाने की कसम खायी है वह उसका साथ जरूर देगा और उस पर विश्वास भी करेगा कि इसमें उसकी कोई गलती नहीं है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ बल्कि ब्रजेश रजनी से घृणा करने लगा। बात–बात पर उसे ज्ञान के बारे में बोलकर शर्मिंदा करता, पर रजनी कुछ नहीं बोलती और चुपचाप उसके व्यंग्य बाणों को सहती। अब ब्रजेश का सारा समय घर के बाहर ही बीतता, घर देर रात को लौटता और नशे में धुत पडा रहता।रजनी ने ब्रजेश को बहुत समझाने की कोशिश की, कि अब वह सिर्फ ब्रजेश की ही है पर ब्रजेश पर कोई असर नहीं हुआ, बल्कि रजनी पर ब्रजेश के अत्याचार बढने लगे। बात–बेबात पर रजनी को पीट देता और रजनी कुछ नहीं बोल पाती। इतना ही नहीं ब्रजेश ने अपने पापा–मम्मी से भी रजनी और ज्ञान के बारे में बता दिया था जिसके कारण रजनी की सास भी रजनी को ही ताने देती। अब रजनी का उस घर में रहना दूभर हो गया था। वह न तो ज्ञान के पास जा सकती थी और नही ससुराल छोड मायके। बस चुपचाप घुटती रहती और अकेले में रोती। जब उसके साथ अग्नि के सात फेरे लेने वाला उसका पति ही उसका साथ देने को तैयार नहीं था तो औरों से उसे क्या उम्मीद मिल सकती थी, यही सोचकर वह मन को ढॉढस बॅंधाती। एक दिन तो हद हो गयी। रजनी की सास ने रजनी के मायके चिट्ठी लिखी कि ''आकर अपनी लडकी को ले जायें, हम ब्रजेश की दूसरी शादी करने जा रहे है। हमें आपकी लडकी की जरूरत नहीं।'' चिट्ठी पढकर रजनी के भइया के होश ही उड गये। वो तुरंत ही रजनी की ससुराल पहुँच गये। रजनी की सास ने दीनानाथ को खूब खरी खोटी सुनाई और वो चुपचाप सुनते रहे। आज उन्हें पहली बार गलती का अहसास हो रहा था। रजनी के श्वसुर रामगोपाल ने तो स्पष्ट कह दिया कि ''हमें आपकी बहन की कोई जरूरत नहीं, और आप इसे वापस अपने घर ले जा सकते हैं। और फिर कभी भी दुबारा इस घर में रजनी को वापस नहीं आना है।'' रजनी के भइया ने उन्हें बहुत ही समझाया पर उन लोगों ने दीनानाथ की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। बोझिल मन से दीनानाथ ने रजनी से तैयार होने को कहा, लेकिन ये क्या? रजनी का उत्तर सुनकर दीनानाथ सन्न रह गये–''नहीं भइया अब मैं वापस नहीं जा सकती, यही मेरा घर है। मैं मर जाऊँगी पर वहाँ जिन्दा नहीं जाऊँगी। इतना कह कर रजनी आँसुओं को आँखों से बाहर निकलने से रोकने में असफल होने के कारण, अपने कमरे चली जाती है और खूब रोती है। पं0 दीनानाथ वापस आ जाते हैं। जिस पैसे का

gkL; dfork

अंग्रेज गये जब भारत से, **सीमा मिश्रा**
तो चाय की प्याली छोड गये।
भारत के लोगों से इसका,
एक प्यारा रिश्ता जोड गये।

यह रिश्ता था जब नया नया,
तो शहरों तक ही सीमित था।
उस समय कोट टाई वाला ही ,
बस इसके रोग से पीडित था।

लेकिन अब तो गॉव–गॉव में
है प्याली की धूम–धाम।,
स्वागत की चीजों में सबसे पहले,
आता है टी का नाम।

कोई मित्र हो या हो सम्बन्धी,
यदि दिया नहीं भर कर प्याली।
तो सभी करते बदनाम उसे ,
चाहे परसे भरकर थाली।

अफसर जो पी ले एक घूँट,
तो सर–सर कलम चलाता है।
लाइसेन्स और परमिट बरसों का,
पल भर में बन जाता है।
यह चाय की प्याली ऐसी है,

बिगडे काम बनाती हैं।
केवल एक रूपया में,
लाखों का काम करती है।

उन्हें घमंड था, उस समय उनका वही पैसा किसी काम नहीं आया। यहॉ तक कि वे अपनी बहन के दुःखों को कम भी नहीं कर सके। आज उनका साथ देने को कोई तैयार नहीं था। खुद को वे बहुत ही अकेला महसूस कर रहे थे। जिस पैसे और जिन लोगों के कारण उन्होंने ज्ञान को ठुकरा कर रजनी की जिन्दगी को बर्बाद कर दिया था, रजनी को इतना दुःख सहने को मजबूर कर दिया था, वही लोग आज उन्हें देखकर सहानुभूति तक जताने नहीं आते बल्कि रजनी को ही बुरा कहते हैं। उधर जब रजनी दीनानाथ के साथ न गयी तो ससुराल वालों का अत्याचार ज्यादा ही बढ गया। रजनी का जीवन जानवरों से भी ज्यादा बुरा हो गया। ब्रजेश की दूसरी शादी की तैयारियॉ शुरू हो गयी। रजनी ये सब दिल पर पत्थर रखकर देखती रही।

फिर एक दिन रात करीब 9:30 बजे के बीच ब्रजेश नशे में धुत घर आया और रजनी से कहा–'' मुझे भूख लगी है और खाना गरम करके ही देना।''रजनी के श्वसुर ऑफिस के दौरे पर गये थे और उनके सुबह लौटने की आशा थी।घर में वह और सास ही थी। ब्रजेश के आने पर तीन सदस्य हो गये थें।

रजनी खाना गरम करने किचन में गयी। रजनी के पीछे–पीछे ब्रजेश व सास भी किचन में गयी। ब्रजेश ने पीछे से रजनी के दोनों हाथों को पकड लिया। यह देख रजनी घबडा गयी। इससे पहले कि वह कुछ समझे और चिल्लाये सास ने उसके मुॅह को कपडे से ठूॅस कर बॉध दिया और दोनों उसे घसीटते हुए बेडरूम तक ले आये। रजनी को सारा मामला समझ में आ गया था। उसकी ऑखों से ऑसू बह रहे थे। ब्रजेश और उसकी मॉ ने बॅधी रजनी के चारों ओर बिस्तर रखना शुरू किया, रजनी का सारा समान रजनी के चारों ओर रखा गया। रजनी सब देख रही थी। उसे मरने का दुःख नहीं था, क्योंकि वह अपने जीवन से वैसे भी ऊब चुकी थी। उसे तो दुःख सिर्फ इसी बात का था कि जिसने उसे जीवन भर सुरक्षा देने का वचन दिया था, सैकडों लोगों के सामने अग्नि के फेरे लेकर जिसने वचन दिया था कि सुख दुःख में हमेशा उसका साथ देगा, जिसके लिये उसने ज्ञान तक को भुला दिया, वही आज अपनी सारी कसमें वादे भूलकर अपनी उसी अर्धांगिनी पत्नी को जलाने की तैयारी कर रहा है। क्या इसी को पति और पत्नी का रिश्ता कहते हैं कि पति से हुई बडी से बडी गलती के लिए पत्नी को सहन कर लेना चाहिए और और पति को क्षमा कर देना चाहिए लेकिन अगर वही गलती पत्नी से गलती हो जाये तो पति उसे छोड दे या जला कर मार डाले जैसा कि आज उसके साथ हो रहा है। उसे भी पता मालूम था कि उसके पति ब्रजेश का शादी के पहले किसी लडकी के साथ सम्बन्ध था लेकिन उसने तो एक बार भी नहीं शिकायत की थी। क्योंकि यह सब पुराना हो चुका था और फिर वह पुरानी बातों के कारण नहीं चाहती थी कि उसका दाम्पत्य जीवन बर्बाद हो। क्या यही नारी का भाग्य है कि वह हमेशा पुरूष की गुलामी करती रहे और पुरूष जब चाहे जो चाहे करता रहे।''

अचानक रजनी का ध्यान टूटा और उसने देखा कि उसकी सास उसी के सामानों से उसे जल्दी जल्दी ढक रही है। रजनी अपनी सास को देख रही थी और सोच रही थी कि क्या मैने अपना घर इसी मॉ रूपी सास और भगवान् रूपी पति के लिये छोडा था।'' यह सोच–सोच कर रजनी रो रही थी। अगर उस समय रजनी का मुॅह खुला होता तो एक बार जरूर अपनी सास से पूछती कि ''अगर आज उनकी बेटी मेरी जगह होती तो क्या उसके साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाता?'' ''नहीं कभी नहीं!'' रजनी ने खुद ही उत्तर ढूॅढ लिया था। उसे पता था कि आज अगर इनकी लडकी होती तो मॉ खुद ही लेट जाती पर अपनी बेटी को खरोंच तक नहीं आने देती। क्या परायी बेटी के लिये मॉ के मन में अपनी बेटी जैसे भाव नहीं उठते? क्या उन्हें उन्हें पता नहीं होता कि मेरी मॉ ने भी मुझे बहुत ही प्यार से पाला है। अगर आज मेरी मॉ होती तो क्या ये सब होने देती?''

रजनी देखती है कि सारी तैयारियॉ हो चुकी हैं। तभी रजनी की सास जल्दी से मिट्टी का तेल ले आयी। ब्रजेश ने जिन हाथों से रजनी की मॉग में सिन्दूर भरकर रजनी को एक लडकी से औरत बनाया था वही आज अपने उन्हीं हाथों से उस पर मिट्टी का तेल छिडक रहा है। रजनी ने अपनी ऑखें बन्द कर ली थी। आज उसे वैसा ही महसूस हो रहा था जैसा कि शादी के समय सिन्दूर दान के समय ब्रजेश के द्वारा उसकी मॉग भरते समय उसे महसूस हुआ था।सास ने माचिस ब्रजेश को पकडायी और ब्रजेश तो जैसे इसी इन्तजार में था। उसने झट से रजनी पर छिडके मिट्टी के तेल में माचिस जलाकर छोड दिया। रजनी जिंदा जला दी गयी। रजनी का मुॅह बन्द था वह चिल्लाकर अपनी पीडा कम भी नहीं कर सकती थी।

ब्रजेश और उसकी मॉ कमरे के बाहर आ गये और कमरे का दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया। अन्दर रजनी न तो उठ सकती थी, न चिल्ला सकती थी बस जल रही थी। और आज उसके जलने का कारण सिर्फ इतना था कि उसने किसी से प्यार किया था। ''क्या प्यार करना इतना बडा गुनाह है कि उसकी

प्रतिदिन

रोज–रोज बन्द ऑखों में,
एक ही सपना पलता है
सूरज सा निकलता है
तेज लहरों से समुद्र की
ज्वार कभी उठता है
आकर पलकों के भीतर
हलचल हिलोरें भरता है
ले जाता उस दुनिया में
जहॉ प्रेम, स्नेह सरलता है
रोज–रोज बन्द ऑखों में
एक ही सपना पलता है.........
कभी सूरज के प्रथम किरण सा
आशाओं का दीपक जलता है
शाम ढले फिर वही दीपक
मोम बनकर पिघलता है
न जाने कब ख्वाब ये मेरे
ऑखों से बाहर आयेंगें
सत्य के धरातल पर आकर
न जाने कब झिलमिलायेंगे
यह सवाल बारम्बार
मनस्पटल पर उभरता है
रोज–रोज बन्द ऑखों में एक ही
सपना पलता है.......... ।

जागृति नगरिया
कल्चरल सेक्रेटरी–जी0पी0एफ0 सोसायटी

सजा जिन्दा जल जाना है?'' पर वहॉ कोई उत्तर देने वाला नहीं था।

अभी कमरे के बाहर रजनी के पति ब्रजेश और सास बैठे थे कि रजनी के श्वसुर रामगोपाल बाहर से घर आते हैं।और दोनों को घर के बाहर देखकर पूछते हैं –''क्या हुआ जो तुम दोनों सुबह के तीन बजे घर के बाहर बैठे हो?'' बस यूँ ही–ब्रजेश ने मुँह बिचकाते हुए कहा। तभी रामगोपाल की नजर कमरे से निकलते हुए धुँए पर पडी। और वे लगभग चिल्लाते हुए कमरे की ओर दौडे और दरवाजा खोलते हैं। उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। कमरा धुँए से भरा था। तभी वे चिल्लाये ''ब्रजेश जल्दी आओ, बहू जल रही है। ब्रजेश औरउसकी मॉ अन्जान बनते हुए कमरे की ओर बढते हैं और घबडाते हुए एक दूसरे को देखते हैं।रामगोपाल की आवाज सुनकर एकाध पडोसी भी जागकर वहॉ इक्ट्ठे हो गये। रामगोपाल ने पानी डालकर आग बुझाने की कोशिश की। रामगोपाल ने देखा कि रजनी के हाथ बॅधे थे और यह देखकर उन्हें विश्वास हो गया था कि रजनी को जलाया गया है। लेकिन वे कुछ नहीं बोले और रजनी के हाथों को खोल दिया। फिर सबने मिलकर रजनी को अस्पताल पहुॅचाया, परन्तु ब्रजेश और उसकी मॉ घर पर ही रहे क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं रजनी पुलिस को बयान न देदे। रजनी बहुत ही ज्यादा जल चुकी थी। उसकी हालत गम्भीर थी। रजनी की सॉसें रूक–रूक कर चल रहीं थीं।सभी उसे देखकर बहुत ही दुःखी हो रहे थे।थोडी देर में रामगोपाल का अस्पताल से फोन आया कि ब्रजेश को भेज दो, पुलिस उससे पूछताछ करना चाह रही है। अब ब्रजेश और उसकी मॉ परेशान हो गये। फिर भी उन्हें अस्पताल तो जाना ही था इसलिये वे अस्पताल गये। वहॉ पुलिस ने ब्रजेश से पूछताछ की जिसमें ब्रजेश ने बताया कि रजनी ने आत्म हत्या करने की कोशिश की, जबकि उस समय हम सब घर में नहीं थे। और यही बयान रजनी की सास ने भी दिया। तब तक रजनी को थोडा–थोडा होश आ चुका था। पुलिस ने रजनी से पूछा कि ''क्या आपने आत्म हत्या करने की कोशिश की? क्या ये सच है? अगर हॉ तो क्यों?'' रजनी से बोला नहीं जा रहा था। फिर भी उसने धीरे–धीरे बोलने की कोशिश की पर उसे बोलने में दिक्कत हो रही थी। उसने धीरे–धीरे टूटे फूटे शब्दों में इस प्रकार बयान दिया–'' सर, सर मेरी ही गलती के कारण आग लगी मेरे पति व सा..सा...(थोडा रूकते हुए) बहुत...बहुत अच्छे हैं।'' रजनी को सॉस लेने में बहुत ही दिक्कत हो रही थी। उसकी हालत देखकर रामगोपाल भी रो पडे। पर निर्दयी सास व पति पर कोई असर नहीं पडा। रजनी आगे बोलती है–'' मेरा पोस्.....पोस्ट....मार्टम न करवायें। यही आखिरी.....मेरी आखिरी इच्छा है। मेरी अन्तिम ....क्रिया मेरे भइया करें।'' वह अपने पास खडे श्वसुर का हाथ पकडकर कहती है–'' मेरी ...इच्छा पूरी करें. ...करेंगें न''। रामगोपाल ने ''हॉ'' में सिर हिलाते हुए ही कहा। उनके मुँह से कोई शब्द नहीं निकल सका। वे रो रहे थे। रजनी की ऑखों से ऑसू भी बह रहे थे। इतना कह कर रजनी ने हमेशा के लिए ऑखें बन्द कर लीं। रजनी इस निर्दयी दुनिया को छोडकर हमेशा के लिए जा चुकी थी। रजनी का अन्तिम संस्कार उसके भइया ने किया था। उसने जो कहा था वही किया भी आखिर वह मरकर ही वापस मायके गयी थी।

बाबूजी....बाबूजी, अरे आप क्या सोच रहे हैं बेटे रामेश्वर ने दीनानाथ को झकझोरते हुए कहा। '' हॉ, कुछ तो नहीं, बस तेरी बुआ की याद आ रही है''–दीनानाथ ने ऑख के कोर में आये ऑसू को पोछते हुए कहा। ''चलिए बाबूजी अन्दर चलिए ।रात हो चुकी है–'' रामेश्वर ने दीनानाथ का हाथ पकड कर उठाते हुए कहा। ''हूँ , बेटा तू चल मैं अभी आता हूँ''– दीनानाथ ने बेटे से कहा। रामेश्वर अन्दर चला जाता है। दीनानाथ चुपचाप बैठे हैं। दीनानाथ सोचते हैं–''क्या आज इतिहास फिर से दोहराया जायेंगा? । नहीं–नहीं, मैं अब अपना फैसला किसी और पर नहीं लादूॅगा। आखिर सरोज कोई बच्ची तो नहीं कि वो समझ नहीं सकती?उसे भी कुछ फैसले खुद ही करने दूॅगा। आखिर कब तक मैं उसका साथ दे पाऊॅगा? और फिर ये उसके पूरे जीवन का सवाल है। मैं मानता हूँ कि सरोज मेंरी बेटी है, मेरे कारण ही वह इस दुनिया में आयी है। लेकिन उसकी जिंदगी पर मेरे साथ–साथ उसका भी हक है। फिर मेरे ही कारण रजनी की जिन्दगी बर्बाद हुई, मेरे की कारण उसे कोई सुख नहीं मिल सका। अब ऐसा सरोज के साथ हुआ तो मैं जीते जी मर जाऊॅगा। अगर वह विभव के साथ ?शादी करके खुश रहना चाहती है तो उसी के साथ उसकी शादी होगी इसके लिए मुझे चाहे जो कुछ करना पडे, जो कुछ सहना पडे मैं करूॅगा, मैं सहूॅगा। पर एक और रजनी को नहीं जलने दूॅगा। न मैं रजनी की शादी जबरदस्ती उस घर में करता और ना ही आज मेरे सामने इतना बडा प्रायश्चित होता। अब वक्त आ गया है कि जब मैं इस अपराध का प्रायश्चित कर सकूॅ। पूरी तरह से तो नहीं पर कुछ अंशों में मैं प्रायश्चित कर ही सकता हूँ।और वो भी सरोज की शादी विभव के साथ करके। अचानक दीनानाथ के चेहरे पर एक चमक उभर आयी। और दीनानाथ, जो अभी तक निढाल से बैठे थे, उठते है।उन्हें अपने हाथ–पॉव में अजीब सी शक्ति का अहसास होता है। और वह फुर्ती से अन्दर कमरे में जाते हैं। और अपनी पत्नी से कहते हैं–''सुन रही हो, कल मैं विभव के घर जाऊॅगा बात पक्की करने।'' यह सुन कर सरोज की मॉ आश्चर्य से दीनानाथ को देखती है। दीनानाथ ने अपनी पत्नी के कंधे पर हाथ रखकर कहा–''तुम मेरी अर्धांगिनी हो, इसलिए मैं जो प्रायश्चित करने जा रहा हूँ उसमें मेरा साथ दोगी ना!'' दीनानाथ की पत्नी ने सहमति जताते हुए दीनानाथ के हाथों को अपने हाथों में ले लिया।

☎698989, 699112

CYBER POINT

मधु प्रेस के बगल, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद–8
कम्प्यूटर जॉब वर्क, थीसीस वर्क, प्रोजेक्ट वर्क
स्क्रीन प्रिटींग, विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, पम्पलेट, पोस्टर की डिजाइनिंग
का एकमात्र और उत्कृष्ट संस्थान
प्रो0 हरि प्रताप सिंह

महुवा

रजनीश कुमार तिवारी "राज"

ज्योंहि ''राज'' को पता चला कि रेशमी आ गयी, वह भागकर उससे मिलने गया, परन्तु वह ज्योंहि उसके सामने गया, अपने आपे से बाहर हो गया। उसके अंग पे लहराती लाल साड़ी और माथे पर बिंदिया और बालों के मध्य में माथे से शुरू मॉग की रेखा में लाल रंग का भरा सिन्दूर एक दुल्हन को प्रदर्शित कर रहा था। चुटकी भर सिंदूर ने उसके वर्षों के सपनों का महल जला कर राख कर दिया। सामने खडी वह खिलखिला रही थी। राज तुरंत ही अपने कमरे में गया और हमेशा के लिए वह शहर छोडने के इरादे से अपने सामान को बॉधने लगा कि आलमारी से किताबें उठाते वक्त एक किताब गिर कर बिखर गयी। वह ज्योंहि उसे उठाता है किउसमें से एक तस्वीर गिर पडती है। वह तस्वीर को एकटक देखता रहता है। वह कोई और नहीं बल्कि ''महुवा'' थी।

रेश्मी के अंग पर लहराती लाल रंग की साडी, माथे पर बिन्दिया, सर पे माथे से खिंची सिंदूर की रेखा एक दुल्हन को सुशोभित कर रहा था। चुटकी भर सिंदूर ने मेरे सपनों का महल जला दिया। सामने खडी वह खिलखिला रही थी और मैं पागल हुआ जा रहा था। गुस्से में आकर हमेशा–हमेशा के लिए यह शहर छोडकर तुरन्त चला जाना चाहता था। मैं अपना सामान बॉधने लगा। आलमारी से किताब उठाते हुए एक पुरानी किताब गिरकर बिखर गयी। उस किताब में से एक पुरानी तस्वीर गिरी जिसे उठा कर मैं देखने लगा। वह कोई और नहीं मेरी महुवा थी। मैं वह फोटो लेकर एकटक देखता रहा और वर्तमान को भूलकर भूतकाल की यादों में सिमटने लगा।

उस समय हम गॉव में रहते थे और मेंरे घर के सामने वह रहती थी। हम दोनों एक ही कक्षा में पढते थे। इसलिये साथ–साथ जाते और साथ–साथ आते थे। हम दोनों ही पढने में कक्षा में सबसे तेज थे। अतः सभी हम दोनों से जलते थें। परन्तु मैं उसे बहुत पसन्द करता था। वह बहुत ही सुन्दर थी। और साथ में उसका साधारण लिबास बडी–बडी प्यारी ऑखें, सुन्दर बाल उसका शर्मीलापन एक हिन्दुस्तानी स्त्री की जो भी खासियत होती है वह जवानी पर उतरते ही मुझे उस पर समर्पित कर गयी। हम लोगों का साथ रहना, खाना दोनों के दिलों के बीच कब प्यार के अंकुर को फोड गया, कुछ पता ही नहीं चला।वह मुझे किसी अन्य लडकी से बातें करते हुए नहीं देख सकती थी। हम दोनों ही गॉव से दूर एक आम के बाग में चले जाया करते थे और वहॉ नहर के किनारे एक आम के पेड के नीचे दोनों बैठकर घंटों दुनिया से दूर समय बिताया करते थे, सपनों के महल में खोये रहते थे। वह मेरा पूरा ख्याल रखती । और हमेशा अपनी पसंद की कमीज पहनाती थी। कपडों की मरम्मत करती और मेरी सेहत का ध्यान भी रखती थी। एक तरह से वह ही बचपन में मेरी दोस्त मेरी सभी कुछ थी। और मैं उसके लिए सबकुछ था।

समय गुजरता गया और मुझे पढाई के लिए शहर जाना पडा। जब मैनें महुवा को बताया कि मैं पढने के शहर जा रहा हूँ तो वह कितना रोयी थी। वह उस दिन मुझे पकडकर उसी जगह पर ले गयी, जहॉ पर मेरा और उसका पूरा दिन गुजरता था। नहर के किनारे उसी पेड नीचे बैठकर रोरो कर उसने कहा था–''कि राज इस जगह को साक्षी मानकर वादा करो कि तुम जरूर लौटकर के आओगे। हम दोनों के प्रेम के ये पेड, ये जमीं सभी साक्षी हैं। इनको देखो राज।'' मेरी मजबूरी थी। मैं भी रोता रहा, सुनता रहा।

मैने उन वादियों को, अपने प्रेमस्थल को साक्षी मानकर दो वर्ष बाद वापस आने का वादा किया और यहॉ शहर में आकर रेशमी के बेवफाई का शिकार बना। और सब कुछ भूल गया। अचानक मेरा ख्याल टूटा और जल्दी से अपना सामान तैयार कर मैं तुरंत गॉव जाने की तैयारी करने लगा। मैं स्वयं को कोसने लगा कि राज मैने महुवा के साथ गुनाह किया है। मैने उसका सच्चा दिल तोडा है।मैं खुद को कोसे जा रहा था। आज पूरे 4 वर्ष के बाद मैं गॉव जा रहा था। सुबह की गाडी से बैठकर मैं चल पडा। रास्ते भर खुशी–खुशी के ख्यालों में, उसके मधुर ख्यालों में डूबा रहा। मै अपनी पुरानी यादों को गले लगाकर खुश होता रहा। कितनी जल्दी सफर पूरा हो और गॉव आए। वह मुझे कितना चाहती थी, कितना रोयी थी मेरे लिए जब उसे मालुम चला कि मैं शहर जाने वाला हूँ। मेरे शहर आने के एक दिन पूर्व मरी पंसद का डोसा बनाकर अपने हाथों से मुझे खिलाया था। जब उसे रोता देख ऑखों में ऑसू आते तो वह मेरे हाथों पर लिख देती 'मेरी कसम है, रोना मत'। वह कहती– राज, मैं तुम्हारा इन्तजार करुगी।

अचानक एक झटके से मेरा ख्याल टुटकर वर्तमान में बदला। गाड़ी रुकी, मेरा प्लेटफार्म आ चुका था। मैं हजारों उमंगे लिए गॉव के उसके घर गया। जब मैं महुवा के घर पहुॅचा तो उस क्षण मेरे जेहन में जो काली ऑधी उठी उसे सह पाना बड़ा ही मुश्किल था। महुवा का उजड़ा हुआ घर किसी भयंकर तूफान में रह गया था। इतना भयंकर तूफान जिसने शायद महुवा के घर पर ही प्रलय लीला दिखायी थी। पूरा घर शमसान सा लग रहा था, सॉय करते सूखे पत्ते खामोशी का संकेत कर रहे थे। वहीं सामान फेंककर मैं दौड़ता हुआ अपने प्रेमस्थल प गया। वहॉ भी कभी कोयलों की कूक हुआ करती थी परन्तु आज सूखे पत्तों की कड़कड़ाहट एक वीरानेपन की गाथा सुनाकर महुवा के दर्द का इज़हार कर रही थी। एक–एक

पेड़ मानों ऑसू बहा रहा थ, मुझे कोस रहा था–'राज तूने बहुत बड़ा गुनाह किया है, महुवा तुम्हारी थी, परन्तु तुम......।' अपने प्रेमस्थल के उसी पेड़ को पकड़कर मैं खूब रोया, मन किया कि नहर में कूदकर जान दे दूॅ। परन्तु मन ने कहा –'नहीं राज, तुम्हे महुवा को खोजना है और उससे माफी मॉगनी है। मैं पागल सा होता जा रहा था। दौड़ते हुए ही मैं उसकी एक सहेली के पास गया। उसने बताया–राज, तुमने महुवा के साथ बेवफाई की है। तुम्हारे जाने के बाद वह बिल्कुल अकेली हो गयी थी। बस वहीं पेड़ के नीचे अकेले, चुपचाप बैठी किसी शून्य में निहारती रहती थी। गाड़ी तो जैसे उसके लिए देवता थी। वह रोज सुबह–शाम दो पल के लिए खुश होकर जाती और रोकर लौटती थी। उसे विश्वास था कि तुम जरुर आओगे। गॉव वाले उसे पागल कहकर चिढ़ाते थे। पर वह तुम्हारा इंतजार उसी तरह करती रहती। एक दिन वह बेहद खुश थी। सुबह ही सुबह उठकर उसने पूजा आदि किया और फिर मेरे पास आयी। उसी पेड़ के नीचे खूब साफ–सफाई किया। इतने दिनों के बाद मैंने उसे खुश देखा था। मैंने उसे पूछा–क्या बात है? तो उसने मुझे खुशी–खुशी बताया कि आज पूरे दो वर्ष हो गये हैं और आज मेरा राज आने वाला है। इसीलिए उसकी पंसद की गुलाबी साड़ी पहनी हूॅ। यह रंग उसे बहुत ही पंसद था। इस रंग की साड़ी देखकर वह खुश हो जाएगा। फिर वह मेरे साथ स्टेशन गयी। गाड़ी तो आयी परन्तु तुम नहीं आए। राज, वह इसे सह न सकी और इस सदमें से वह बीमार रहने लगी। दिन गुजरते गये और हालात बिगड़ते गये। एक रात्रि बहुत तेज तूफान आया और वह अपने पिता के साथ कहीं चली गयी। वहा कहॉ गयी उसका किसी को पता नहीं है।

इतना सुनने के बाद मैं अपना होश खो बैठा, लेकिन मुझे उसे खोजना था। मैं अपने को संभाल कर उसी प्रेमस्थल पर उसी पेड़ के ऊपर से चील के घोसले से एक पोटली गिरी जो गुलाबी रंग की थी। मैंने दौड़ते हुए उसे उठाया और खोला। उसमें एक पत्र था, जो महुवा के हाथों से लिखा गया था। उस पत्र को मैने पढ़ा–

प्रिय राज,

तुम नहीं आए मुझे इन वादियों में अकेला छोड़ दिया। मुझे सभी पागल कहते थे। मैं दिन–दिन, पल–पल तुम्हारा इंतजार करती थी। ये पेड़, ये प्रेमस्थल, ये वादियॉ मेरी गवाह है। आज पूरे दो वर्ष हो गए, मैंने तुम्हारी पंसद की गुलाबी रंग की साड़ी पहनी, तुम्हें देखने गयी, पर तुम नहीं आए। दोनों ने प्यार किया था पर तुम भूल गए। परन्तु मुझे याद रहेगा कल भी। अगर जीवन रहा तो इंतजार करुगी। मेरी तबीयत खराब है, मेरी जिन्दगी का भरोसा नहीं। मैं यह खत लिखकर एक पेड़ के खोह में रक्खे जा रही हूॅ। तुम इस जगह हाक नहीं भूलोगे ऐसा मुझे विश्वास है। तुम्हारा मैं मरते दम तक इंतजार करुॅगी।

तुम्हारी

महुवा

यह पत्र पढ़ने के बाद मैंने महुवा को खोजने का निश्चय किया। महुवा के नाम से ही महुवा की बाग लगाकर उसकी याद में महुवा बेचता हूॅ और उसे खोजता हूॅ।

इतना कहते–कहते उसकी ऑखों से समुन्दर की धार बह निकली। मैं भी उस लड़के की कहानी को सुनकर खुद को न रोक सका। और मेरी भी ऑखे भर आयी। तभी मेरे ऊपर वाली बर्थ से एक दुबली–पतली लड़की उतरी जिसकी ऑखे उभरी थी, शरीर में भी जान न के बराबर थी, बाल बिखरे–बिखरे थे। राज उसे देखते ही महुवा, महुवा .... कहकर उससे लिपट गया। दोंनों की प्रेम भक्ति को देखकर सभी का दिल भर गया।

ग़ज़ल

सत्य से किसको सरोकार है, खामोश रहो।
झूठ इस दौर का किरदार है, खामोश रहो।
देश का कौन वफादार है खामोश रहो,
जिसको देखो वो अदाकार है, खामोश रहो।
कोई मस्जिद का विरोधी, कोई मंदिर के खिलाफ,
यूॅ भी हर शख़्स गुनहगार है, खामोश रहो।
जिसको दौलत से है परहेज़ तो शोहरत से गुरेज,
कैसे कह दूॅ वो समझदार हैं, खामोश रहो।
जो मेरे शहर मे दीवाना बना फिरता है,
सबसे बढकर वही होशियार है, खामोश रहो।
और फॅस जाओगे मुंसिफ़ से शिकायत करके,
वह भी जालिम का तरफदार है, खामोश रहो।
अपने घर मे सभी अपने हैं मगर ऑगन में ,
हर तरफ एक नयी दीवार है, खामोश रहो।

बुद्धिसेन शर्मा
संपर्क– 14/10 केरलाबाग़
लेबर कॉलोनी, इलाहाबाद
दूरभाष–(0532)657075

आवश्यक सूचना

दोस्तो बधाई हो। इस कालम के अन्दर आप अपने इष्टमित्रो,रिश्तेदारों,सहयोगियो इत्यादि को जन्मदिन/शादी/शादी वर्षगांठ/होली/परीक्षा पास करने पर/नौकरी प्राप्त करने पर/प्रमोशन इत्यादि पर बधाई संदेश भेजना चाहते है तो आपको अपना संदेश, संदेश प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पता व 25.00 रुपये मात्र देना होगा। अगर आप फोटो भी छपवाना चाहते है तो आपको 50.00रुपये व फोटो देना होगा। आपका संदेश पत्रिका में छपेगा और पत्रिका परिवार उस अंक को आपके द्वारा दिये गये पते पर डाक से भेजने की व्यवस्था करेगा।

आवश्यक सूचना–

प्रिय पाठकों, आपकी पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** में "स्नेहिल जायका" नामक नया स्थायी स्तंभ की शुरूआत करने जा रहे हैं। जो कि उन महिलाओं के लिए खास होगा जो तरह–तरह की रेसिपी बनाने में निपुण है। इसके लिए आप पाठक गण अपनी–अपनी रेसिपी लिखकर भेज सकते हैं। जिसे हम अपनी पत्रिका में छापकर प्रदेश के अलग–अलग कोने तक पहॅुचायेंगे और अधिक से अधिक लोग आपकी रेसिपी को पढकर उसका लाभ उठा सकेंगे।

गाँव की पाती

कौशलेन्द

पंचो राम–राम

पाती बांचते आज से पचास वर्ष पहले का गांव आखों में उतर आता है अपने सीमित साधनो के सहारे गरीबी का जीवन जीते गांव के लोग ऊपर से अंगरेजी राज के नये–नये फरमान हमारे खेत,बााग कुँये तालाब हमारे नहीं थे, मकान बनवाने के लिये बाग से लकड़ी या पेड़ काटना हो तो राजा के आदमी से पूँछना पड़ता था, नहीं तो जुर्बाना अपने खेत पर अपना हक नहीं था, राजा के मुलजिम लगान न देपाने पर हमें अपनी जमीन से बेदखल कर देते थे, खेती के जो साधन आज हैं वे तब नहीं थे हमारे लिये जो कानून बनते थे, वे बिलायत से बन कर आते थे और हम उनका पालन करते थे, जिस रास्ते राजा की सवारी जाती थी वे रास्ते हमारे लिये बन्द रहते थे टूटे फूटे झोपड़ों में हम रहते थे और एक तूर की पैदावार दूसरे तूर तक नहीं चलती थी उपवास भी होते थे उस समय भुखमरी और महामार जैसी प्राकृतिक आपदाओ से लड़ने के लिये हमारे पास कोई ठोस उपाय नहीं था रोजगार भी इतने नहीं थे कि गांव के लोग अपना और परिवार का भरण पोषण करते थे। सूखा पड़ने पर गांव में जो काम कराता था उसमें हमारी मजदूरी बहुत कम थी। सन् चार के सूखे के साल गांव मेंजो बाँध बँधवाया गया था उसके भीतर की जमीन जातने वाले को राजा को अधिक लगान देना पड़ता था हम वैसे ही गरीब के गरीब बने थे। राजा की दरबार में जब अंगरेज आफीसर आते तो उस रियासत के रियाया हर गांव से होकर उनकी जय बोलने जाते अंगरेज सोचते यहाँ हमारी हुकुमत चल रहीं हैं। पंचो एक कविताई याद आती हैं।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा,
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दूस्तां हमारा।

हमारे भीतर कुछ बात है कि हम अपनी हस्ती नहीं मिटने देते हैं हमने देश में लगभग दो सौ वरषों से जड़ जमाये और हमें गुलाम बनाये अंगरेज को अपने देश से खदेड़ने का जो बीड़ा अठारह सौ सत्तावन में उठाया और गांव के ही रहने वसने वाले मंगल पाण्डेय नामक एक अंगरेजी फौज के देशी सिपाही ने आजादी की लड़ाई की पहली गोली अंगरेज आफिसर के सीने में मार कर जो शुरूआत किया वह संघर्ष देशव्यापी हो गया। पनद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस को देश आजाद हुआ और तब से हम स्वराज के दिन देख रहे हैं। अपनी आजादी के पचास वर्ष पूरे कर हम इस आजादी की स्वर्ण जयंती मना रहे हैं। हमारे गांव में भी पनद्रह अगस्त की रात को स्कूल में रोशनी की गई थी सबेरे लड़कों ने गांव में रमचन्ता रात देर रात तक वरसाती कीट–पतंगों का खेल देखता रहा और उसकी अम्मा उसे दूध पीने के लिये बुलाती रहीं गांव की हर गली से होकर प्रभात फेरी करते स्कूली बच्चों को देख–देख उनके अभिभावक प्रसन्न होते थे और बच्चे नारा लगाने आगे बढ़ते चले जा रहे थे। गांव के बूढ़–पुरनिया जो आजादी की लड़ाई के समय जीवित थे उनकी वाँछे खिल उठी वे दिन याद आये जब गांव–गांव आजादी के दीवाने अंगरेजों भारत छोड़ों का नारा लगाते करो या मरो पर आमादा हो गये थे गांव में जिन्होंने गुलामी का दुःख सहा था उन्होने स्वर्ण जयंती की सराहना किया और जो आजादी के बाद पैदा हुए और गॉव के विकास की गति तथा अपनी स्थिति को देख रहे हैं। वे इसे कोई सरकारी जलश मान कर सरपंच की चौपाल में बैठे दहला पकड़ खेलते रहे क्योंकि आज भी गॉव सुनता तो सब की है लेकिन करता अपने मन की है। प्रभात फेरी हो रही थी स्कूली बच्चे भारत माता की जय बोलते चल रहे थे अपने हसोड़े स्वभाव के चलते कल्लू बाबू ने रामचन्दर काका से पूँछ ही लिया कि काका ई भारत माता कौन है काका ने गुलामी के दिन देखा था, आजादी की लड़ाई लड़ी थी, देश के बड़े नेताओं का भाषण सुना था, जेल गये थे, काका को भारत माँ से प्यार है काका तिलमिला उठे और कहा कल्लू बाबू! गाँव का किसान धरती पुत्र है और धरती उसकी माता है, भारत देश की इस धरती पर बसे गाँव, खेत, खलिहान, बाना, नदियाँ, खनिज, कल – कारखाने और गाँव में बसे दरिद्रनारायाण की जब जय होगी तो भारत माता की जय होगी और पंचो वह जय हमारे ही प्रयास से हुई है, कोई माने या न माने इनकी जय होगी तो हमारी हमारे गाँव, देश और भारत माता की जय होगी, पंचो गाँव के लोग आज भी देश की सत्ता को मानते तो हैं।

भाषण देकर भगीं मोंटरें
घर लौटे कतवारू
पीठ फेर कर चूल्हे से
देहरी पर बैठी पारू
खेतों में चूहे की मादें
खोद रहे हैं बच्चें
गहरे दबे हरे डंठल सब
निकले दाने कच्चे
सिर पर मोटे तार दौड़ते
बिजुली गई बोकारों।

आजादी के बाद गांवों के विकास के लिये जिस उत्साह के साथ योंजनाए बनी और उन पर बहुत कुछ अमल भी किया गया वह उत्साह अब देखने कों नहीं मिलता हैं गांवों के इस देश में गांव का ही रहने वाला सरकारी कर्मचारी अपने को ग्राम सेवक कहने में शर्माता है। वह अब ग्राम विकास–अधिकारी हैं यह अधिकारी की जो बू हमारे भीतर हैं यह सैकड़ों वर्ष तक गुलाम रहने के बाद अँगरेजी प्रभाव है जिसे हम आज भी अपने भीतर रहे हैं और गांव के आम गरीब आदमी को अपने से इसलिये दूर मान कर चलते है कि उसका जीवन स्तर हमसे नीचे है विजुली, सिचाई,स्वास्थ्य, शिक्षा, यातायात आवास

आवश्यक उपभोक्ता सामग्री आदि तमाम सुविधायें जो आज गांवों तक पहुँच रहीं हैं और जिनका गांव के लोग लाभ भी उठा रहें हैं उन्हें सही अर्थों में गांव से जुड़े अधिकारी और कर्मचारी जी जान लगा करहर गांव के आम आदमी तक पहुँचाने के लिये तत्पर नहीं दिखाते ऐसे में गांव के लोग आदि व्यवस्था पर कोप करें तो अस्वभाविक नहीं लगता हैं।

पंचो हमारी जरूरतों का सरकारी योजनाओं के साथ आपसी ताल मेल विगड़ गया हैं। हमारे ऊपर हमारे विकास के लिये खर्च तो खूब किया जा रहा हैं। लेकिन उसका पूरा–पूरा लाभ हमें नहीं मिल पाता हैं तो गांव का आदमी सोचता हैं कि सरकार हमसे नहीं हम सरकार से हैं उसकी कृपा पर जीते गांव आवश्यक आवश्यकताओं के लिये दर–दर भटकता हैं, पंचों प्रकार के जो विकास की रूकावटे है वह हमारे और आप के बीच के ही कुछ विचौलिये हैं जो अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये योजनाओं को बीच में ही लोक लेते हैं। गांव की सड़क और मिलन केन्द्र का ठेकेदार यदि पूरा धन खर्च न करके कुछ खाले तो उसे कौन रोक सकता हैं वह भी हमारे ही बीच का आदमी होता हैं गांव के लोगों में संतोष होता हैं। और यही कारण है कि आज गांव में कुछ ही लोग हैं जो सरकारी सम्पति को अपनी मानते है नहीं तो सरकारी भवन के खिड़की जंगलों को तोड़कर उसे कोटे के भाव वेंचने में गांव के आदमी को हिचक नहीं होती हैं, आजादी के पचास वर्ष गुजारने के बाद भी हमारे देश के नेताओं का देश मान कर चल रहे हैं, और नेता हमें अपना मान कर चल रहे हैं, कलुइया के दरवाजे चुनाव के दौरान एक नेता जी ने वोट देने को कहा तो कलुइया ने कहा 'न देब वोट का डेर हैं हमका' पंचो यह स्थिति हो गई हैं आज गांव की कि उसे वोट देने में कोई आनन्द नहीं मिलता उसे अपने द्वारा अपनी सरकार चुने जाने का कोई सेख नहीं मिलता मागते है तो केवल एजेन्ट, आम वोटर उदासीन रहता हैं गरीबी की रेखा बनी तो लेकिन गांव में इसके ऊपर कौन और इसके नीचे है आज तक यह बात साफ नहीं हो पाई है गाँव में दो चार लोगों को छोड़ कर शेष सभी लोग गरीब ही दिख रहे हैं लेकिन अमीरी के हर स्वांग रचते गाँव के लोग स्वाभिमानी होते हैं वे अपनी गरीबी को जाहिर नहीं होने देते पंचो यही हमारे भारत का मूल स्वरूप है जो गाँवों में आज भी है ढोका भर गुड़ और लोटा भर पानी वाले भारत के परम्परा वादी गाँव आज भी हैं और रहेंगे विकृतियाँ तो बाहर से आती हैं हम इनसे बचने का पूरा प्रयास करते हुए भी कही न कही प्रभावित हो जाते हैं।

पंचो हाथों में ऑचल ले
दूने दो पॉव को, रहने दो गॉव को, लिखना कम समझना अधिक राम–राम

राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों का योगदान

वर्तमान समय में कहीं–कहीं ऐसे लोग भी मिल जाते है जो शिक्षा का महत्व मात्र प्रमाणपत्र हासिल करने तथा तकनीकी कुशलता प्राप्त करने तक ही जानते है। परन्तु ऐसे लोगों को यह पता होना चाहिए कि शिक्षा का उद्देश्य केवल प्रमाणपत्र प्राप्त कर लेने मात्र से ही पूरा नहीं हो जाता, बल्कि शिक्षा का सही रूप में उद्देश्य किसी भी व्यक्ति का मानसिक व शारीरिक विकास करना है। और आज के इस दौर में ये जरूरी भी है क्योकि आज के माहौल में शिक्षा की महत्ता बढ गयी है। सही रूप से शिक्षा प्राप्त करने से ही सामाजिक व आर्थिक लक्ष्य की प्राप्ति जल्दी हो सकती है क्योंकि कोई भी व्यक्ति तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उसके पास सही जानकारी न हो।जब उसके पास सही जानकारी होगी तभी वह आगे की ओर बढ सकेगा और उसे आगे बढने में किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं आयेगी।

इस सफलता की ओर बढाने में एक शिक्षक का विशेष महत्व है। क्योकि शिक्षको के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। आज के इस चुनौती भरे माहौल में सही जानकारी उसे एक सुशिक्षित शिक्षक से ही मिल सकती हैं और एक शिक्षक के ही सही मार्गदर्शन से समाज के मूल्यों को कायम रखा जा सकता है। इसके लिए शिक्षक को अपनी बुद्विमत्ता का प्रयोग एवं भविष्य के इन नौजवानों को सही दिशा दिखानी चाहिए। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह संसार की विशेष व प्रसिद्व उपलब्धियों को छात्रों को बतायें और उनका मार्गदर्शन करें व अपने छात्रों में विश्वास तथा आत्मविश्वास पैदा करें। यही एक अच्छे शिक्षक की निशानी है।

शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों का सामाजिक मानसिक, व शारीरिक विकास करने मे सहायक हों। छात्रों की छुपी हुई प्रतिभा को प्रेरित करे और सही रूप में प्रयोग करें। शिक्षक को चाहिए कि वह सकारात्मक शब्दों का प्रयोग करें। इससे छात्र कभी भी हतोत्साहित नहीं होता और जीवन को सकारात्मक रूप मे देखता है और वह जीवन में आने वाले उतार चढाव से नहीं घबराता।

शिक्षक को चाहिए कि वह हमेशा मदद के लिए तैयार रहे, तथा समाज सेवा की शिक्षा अपने छात्र को भी देता रहे और उनका उत्साहवर्धन भी करता रहे।

इस प्रकार यह पता चलता है कि एक शिक्षक पर पूरे देश का भविष्य निर्भर रहता है, क्योंकि उसी के कंधे पर कल का भविष्य रूपी नौजवान टिका है और उसी को शिक्षक को ही देश का भविष्य सम्भालना है।इस प्रकार शिक्षक पूरे समाज को प्रभावित करता है और समाज का भविष्य शिक्षको की कुशलता पर निर्भर करता।

आवश्यक सूचना

लेखको से लेख, कहानियां, रोचक सस्मरण, आदि आमंत्रित है। अपनी रचनाओं के साथ में जवाबी लिफाफा लगाना न भूलें नहीं। नहीं तो प्रकाशित नहीं होने संदर्भ में रचनाओं को लौटाया नहीं जाएगा। रचनाओं को हासियां छोड़कर स्पष्ट शब्दों में लिखें।

vkSjrksadhyEckbZNksVhD;ksa\

कभी आपने ध्यान दिया होगा कि कोई आदमी और औरत साथ–साथ बैठे हों तो वे दोनों बराबर ही नजर आयेंगें, पर जैसे ही वे खडे होते हैं उनकी लम्बाई में अन्तर आ जाता है। आदमी का कद औरत के कद से बडा होता है।ऐसा इसलिए होता है क्योंकि पुरूषें के पैरों की हड्डियॉ औरतों के पैरों की अपेक्षा काफी बडी होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नये अध्ययन के अनुसार यह सिद्ध हो चुका है कि आदमियों की करीब चार सेंटीमीटर की ऊॅचाई महज दो जीनों के संयोग के कारण होती है। शोधकर्ताओं ने दोनों जीनों में से एक को 15 वॉ क्रोमोसोम और दूसरे को वाई क्रोमोसोम के रूप में पहचाना गया है। क्रोमोसोम में स्थित जीनों में शरीर या व्यक्ति के व्यवहारिक गुणों के कोड होते है। एक खास जीन या कई जीन मिलकर किसी खास गुण को प्रभावित कर सकते है, भले ही वे सभी गुण असंबद्ध हों। किसी जीन से त्वचा के रंग का निर्धारण होता है, तो किसी से लम्बाई निर्धारित होती है। अतः इन्हीं जीनों के अध्ययन से पता चलता है कि कोई पुरुष

खोज खबर

किसी महिला से लम्बा क्यों होता है?

उपकरण; बैक्टीरिया की पहचान करने वाला–

लोगान की ऊटाह स्टेट यूनिवर्सिटी के बार्ट वाइमर ने एक ऐसा उपकरण बना लिया गया है जिससे कुछ बैक्टीरिया की पहचान आसानी से हो सकेगी। इस उपकरण से सिर्फ 15 से 20 मिनट में ही बैक्टीरिया की पहचान हो सकेगी, जिससे विषैला भोजन खा कर मरने वालों की संख्या में कमी आयेगी। अगर बैक्टीरिया कम संख्या में भी होंगे तो भी इनकी पहचान हो सकेगी।

वक्ष कैंसर का जल्द पता चल सकेगा–

वैज्ञानिकों ने एक ऐसी एक्सरे की मशीन का निर्माण किया है जिससे जल्द से जल्द वक्ष कैंसर का पता चल जायेगा। अभी तक वक्ष कैंसर का पता मैमोग्राफी से ही चलता था, परन्तु मैमोग्राफी से छोटी गॉठ का पता नहीं चल पता था जिससे गॉठ बढ जाती थी और कैसर फैल जाता था। परन्तु यह मशीन एक मिलीमीटर से भी छोटी गॉठ का पता चला लेगा जिससे कैसर की शुरूआत ही पता चल जायेगी और जल्द से जल्द इलाज हो सकेगा।

गर्भाशय का प्रत्यारोपण–

अभी तक मानव अंगों का प्रत्यारोपण किया जाता रहा है। जिसमें से ऑख, गुर्दा आदि प्रमुख रहे हैं। और अब इस श्रृंखला में एक नया नाम और जुड गया है; वह है गर्भाशय का प्रत्यारोपण। अब किसी भी महिला के गर्भाशय के खराब हो जाने पर उसे घबराने की जरूरत नहीं। क्योंकि लंदन के वैज्ञानिकों ने एक ऐसी तकनीकी खोज निकाली है जिससे किसी महिला के गर्भाशय को निकाल कर जरूरतमंद महिला को लगाय जा सकेगा। और बच्चे के पैदा होने पर बाहरी गर्भ को निकाल दिया जायेगा। क्योंकि लम्बे समय तक इसका शरीर में रहना खतरनाक साबित होगा।

-◆ जापान के योशीकाता यामातोतो एक ऐसी मशीन विकसित की है जिससेयह पता चलता है कि एक गायक एक गाना गाने के दौरान कितनी कैलोरी ऊर्जा खर्च करता है।

हंसगुल्ले

१.एक पति पत्नी आपस में काफी देर से झगड रहे थे। तो एक पडोसी ने आखिर में पूछ ही लिया–भाई राकेश, आखिर झगडा किस बात पर हो रहा है?

पति ने पत्नी की ओर इशारा करते हुए कहा कि मुझसे क्या पूछते हो? इन्हीं से पूछ लो।

पत्नी पूरी तरह झल्लाते हुए बोली–तीन घंटे से भी ज्यादा हो गये।अब तक क्या मुझे याद रहेगा कि झगडा किस बात पर हो रहा है।

२. एक मेहमान ने खाना खाते समय मेजबान से पूछा–क्या कारण है कि जब भी मैं खाना खाता हूॅ तो आपका कुत्ता भौंकता है।

मेजबान–कुत्ता अपनी प्लेट पहचानता है, इसलिए वह भौंकता है।

३.एक अध्यापक ने छात्रों से कहा–सिद्ध करो कि तलवार से ज्यादा ताकतवर कलम होती है।

एक छात्र– कलम ज्यादा ताकतवर होती है।क्योंकि कलम से चेक पर साइन किया जा सकता है, पर तलवार से नहीं।

४.एक नेता जी से उनकी पत्नी ने पूछा– आप राजनीतिज्ञ लोग पेड लगाने पर इतना जोर क्यों देते हो?

नेताजी–क्योंकि जिस कुर्सी को पाने के लिए हम एडी–चोटी का जोर लगाते हैं वह भी तो पेड की लकडी से बनी होती है।

५. एक भिखारी से दूसरे भिखारी ने पूछा– अरे मंगतू, तू तो रोज दादर पुल पर भीख मॉगा करता था, आज यहॉ कैसे?

पहला भिखारी– दादर पुल वाली जगह मैने अपने दामाद को दहेज में दे दी है।

पाठको के लिए आवश्यक सूचना

1. यादों के झरोखे से–इस स्तम्भ के तहत आप अपने जीवन की भूली–बिसरी यादे, अनोखी घटनाएं,पहला प्यार, सुनहरे पल आदि लिखकर भेज सकते है। अच्छे लेखों के लिए 500.00 रुपये तक पुरस्कार प्रदाना किया जाएगा। अगर आप अपनी रचना अस्वीकृत के संदर्भ में वापस मगाना चाहते है तो पत्र के साथ जबाबी टिकट लगा लिफाफा लगाना न भूले।

2. पत्र–मित्रता–एक एक बहुत ही दिलचस्प स्तम्भ है। इस स्तम्भ के तहत हम आपका परिचय देश–विदेश के लोगों (लड़को / लड़कियो आदि), से करवायेंगे। इसमें आपको अपना नाम, पता, पिता का नाम, जन्म तिथि, कद, शिक्षा, रुचियॉ, नापंसद,व्यवसाय, तथा अपने बारे में लिखना होगा। अगर आप साथ मे अपना फोटो भी छपवाना चाहते है तो आपको 50.00रुपये का मनिआर्डर या बैक ड्राफ्ट प्रधान संपादक के नाम से भेजना होगा।

लिखें– मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज
277 / 486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद–8

uQ+jr dh vkx

लेखकः एस0ए0ए0रिज़वी
एकाउन्टेंट, इला0 विश्वविद्यालय

पूर्व कथा

पिछले अंक में आपने पढ़ा कमल जो कि सजा काटकर जेल से बाहर आता है। कमल बूढ़ा हो चुका है। वह सूनसान रास्ते पर चलते हुए सड़क के किनारे आकर बैठ जाता है। और अतीत के बारें मे सोचता है। उसके अतीत से जुड़ी सारी घटनाएं किताब के पन्ने के रुप में उलट पुलट रही है। जिसमें उसे दिखायी पड़ता है कि वह अपनी मॉ के मना करने पर भी शालू से ही शादी करना चाहता है।

गतांक से आगे—........

बन्ने खॉ के बयान को सुनते ही कमल चीखा—'' हॉ—हॉ मैने ही बेला का कत्ल किया हैं मैने ही अपनी मॉ को मारा है। जज साहब मुझे मौत की सजा दे दो। सबने मुझसे बेवफाई की है। मेरे प्यार को ठुकराया है।'' वह पागलों की तरह चीखता रहा—'' मैं जिन्दा रहना नहीं चाहता। मुझे मौत दे दे। मैं भी मरना चाहता हूँ।'' वह चीखते—चीखते बेहोश होकर गिर गया।

जज साहब ने सारे सबूतों को ध्यान में रखते हुए और कमल की जुनूनी हालत देखकर उसे बीस साल की कैद्—दे—मशक्कत की सजा सुना दी।

सुबह हो चुकी थी। मगर वह बूढा अपनी आधी खुली ऑखों से न जाने क्या देखता रहा। पास ही सोने वाले कुत्ते ने चादर से निकल कर अंगडाई ली और रात भर आराम से सुलाने का उसे धन्यवाद दे कर दुम हिलाता हुआ वहॉ से चला गया। सडक पर झाडू लगाने वाले ने उसके पास आकर कहा—''अरे ओ बाबा, हट यहॉ से। मुझे सफाई करनी है। जब वह नहीं हटा तो उसने जैसे ही उसे छुआ वह बूढा दूसरी तरफ गिर गया। यह देखकर वह चिल्ला पडा। उसकी चीख सुनकर वहॉ कई लोग जमा हो गये। किसी ने उसे छूकर कहा—'' अरे सॉस तो चल रही है। मुँह पर पानी तो डालो।''

मुँह पर पानी की छींटे पडने पर बूढे ने धीरे से ऑखें खोलीं तो अपने पास भीड देखकर उसे ऐसा मालूम होने लगा जैसे आदमियों की भीड उसकी तरफ बढ रही है। और वह भीड शोर मचाती हुई उसके दिमाग के अन्दर समाती चली जा रही हो। शोर के साथ—साथ उसे ऐसा मालूम होने लगा जैसे उसके सीने पर दो पैर थिरक रहें हों और उन पैरों के नीचे शालू का ऑसुओं भरा चेहरा और उसकी घुटन उसे सुनाई पडने लगी। शोर, घुंघुरूओं की झंकार शालू की सिसकन सभी कुछ बढता गया। ऐसा मालूम होने लगा जैसे उसके दिमाग के टुक्डे टुक्डे हो जायेंगें। कान के परदे फट जायेंगें। बेचैनी बढती गई वह अपना सिर पटकने लगा और फिर उसके मुँह से ''मॉ'' निकला तो सारा शोर सारी घुटन सभी कुछ खत्म हो गया। उसकी मॉ का ममता भरा चेहरा उसके सामने था और हाथ फैले हुये थे।

बूढे के पास खडी भीड ने देखा कि बूढे के चेहरे पर एक मुस्कुराहट फैली और धीरे—धीरे उसकी आधी खुली हुईं ऑखें बन्द हो गयीं। और सुबह की ठन्डी हवा उसके बालों को चूमते हुए गुजर गयी।

❖ समाप्त ❖

वह कौन है???

✍ मोहम्मद तारिक ज्या "दिलवर"

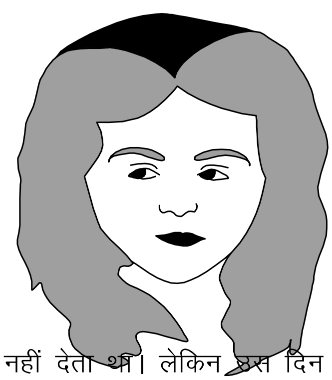

बहुत लम्बे अर्से से हम एक दूसरे से परिचित हैं। लेकिन अब हमारी और तुम्हारी मुहब्बत तेजी से बढती जा रही है। गर्मियों में तुम प्रतिदिन आती रही हो। जिस समय भी तुम आयी मैने तुम्हारी खातिर की और मैं तुम में खो सा जाता था। मेरे पिताजी तुम्हें कुछ नहीं कहते थे। वह जानते थे कि तुम अच्छी हो। गर्मी कडाके की पडती थी। मैं दोपहर में बाहर जाने की तैयारी करता तो तुम आकर मेरा रास्ता रोक लेती थी। तो भला तुम जैसी सुन्दरी को छोडकर मैं कहॉ जा सकता था। कभी—कभी तुम्हें देखकर मेरे दोस्त बाहर से ही चले जाते थे। उन्होंने तुम्हारे बारे में शिकायत भी की। लेकिन मैनें उनसे कह दिया कि जब भी वह तुम्हें मेरे पास देखें तो चले जाया करें। वे मुझसे नाराज भी हुए लेकिन तुम मुझे उनसे अधिक प्रिय थी। मेरे मित्र कहते तुम मुझे एक दिन जरूर धोखा दोगी, परन्तु मैं उनकी बात पर ध्यान नहीं देता था। लेकिन उस दिन के ऐक्सीडेंट ने मुझे झकझोर दिया, जब मैं कुर्सी पर बैठा पढ रहा था। और तुम आ गयी और मैं किताब भी पढना भूल गया और तुममें ऐसा खो गया कि किताब मेरे हाथ से गिर गयी। तभी मेरे पिताजी आ पहुँचे और उन्होंने मेरे साथ देख लिया। उस समय तो उन्होंने कुछ नहीं कहा। सुबह होने पर उन्होंने मुझे बुलाकर पूछा कि क्या वह रोज इसी समय आती है? मैने झूठ बोल दिया कि नहीं। परन्तु उन्हें शक हो गया और कह दिया कि तुम्हें पी0सी0एस0 की परीक्षा देनी है। यदि यही हाल रहा तो तुम कभी पास नहीं हो सकते। उन्होंने कहा—तुम्हारी मॉ ने कई बार मुझसे कहा परन्तु कल मैने अपनी ऑखों से देख लिया। अब सफाई पेश करने की कोई जरूरत नहीं है। मुझे तुम्हारी वजह से ही उस दिन इतनी बातें सहनी पडीं, तुम्हें तो बदनामी का कोई डर नहीं परन्तु मेरा ख्याल रखों यदि मैं परीक्षा में फेल हो गया तो मेरी कितनी बदनामी होगी। जिस दिन भी तुम आती हो मैं बिजली बुझा कर तुम में खो जाता हूँ।

तुम्हारी इतनी बडी कहानी सुनने के बाद मेरे मित्र यह भी जानना चाहेंगें कि वह परी कौन है? वैसे तो मुझे शर्म आ रही है, फिर भी मैं आप लोगों को निराश नहीं करूँगा। तो सुनें उसका नाम है—''नींद''।

गर्भपात कराना किन-किन परिस्थितियों मे जायज

इन परिस्थितियों में गर्भपात करवाया जाना कानूनन अपराध नहीं है– यदि मॉ की जिन्दगी खतरे में है एवं गर्भावस्था जारी रखने में गर्भवती स्त्री का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य बिगड रहा है। बच्चे के विकलांग पैदा होने का डर हो, गर्भ बलात्कार से हो या परिवार नियोजन का साधन असफल होने के कारण हुआ है–ऐसी परिस्थिति में यदि स्त्री गर्भपात करवाती है, तो वह कानूनन अपराध नहीं है। यदि एक मूल्यवान जिन्दगी बचाने के लिए दूसरी जिन्दगी, जिसने अभी जन्म भी नहीं लिया, खत्म कर दी जाये, तो क्या वह भी कानून की नजर में अपराध नहीं है? दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 312 के तहत यदि औरत की सहमति से गर्भपात करवाया जाता है, तो वह अपराध नहीं है, लेकिन यही गर्भपात यदि गलत इरादों से करवाया जाता हैं, तो वह अपराध होगा।ऐसे अपराधी को तीन वर्ष की सजा या जुर्माने या दोनों से दण्डित किया जा सकता हैं। जब मॉ को बच्चे के घूमने का अहसास होने लगता है, और उस समय गर्भपात करवाया जाता है तो ऐसे अपराधी को सात वर्ष की सजा या जुर्माने या दोनों से दण्डित किया जा सकता है। औरत की सहमति के बिना गर्भपात करवाया जाता है तो भारतीय दण्ड संहिता की धारा 313 के तहत ऐसे अपराधी को उम्र कैद या दस साल तक की सजा तथा आर्थिक जुर्माने से दण्डित किया जा सकता है।

जब गर्भ में बच्चे के शरीर के सभी अंगों का निर्माण हो जाता है और मॉ के जीवन को कोई खतरा नहीं होता, तब भी यदि गर्भपात करवा दिया जाता है, तो ऐसा अभियुक्त धारा 316 के तहत अपराधी होगा, न्यायालय ऐसे अभियुक्त को दस वर्ष की सजा या आर्थिक जुर्माने से या दोनों से दण्डित कर सकता है। कोई भी ऐसा कार्य किया जाए या ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाए, तो यह कृत्य आपराधिक मानव वध की श्रेणी में आता है। यदि कोई व्यक्ति गर्भवती स्त्री को धक्का लगाता है और उस कारण उसके गर्भ में पल रहे बच्चे की मृत्यु हो जाती है, तो ऐसा व्यक्ति मानव वध ा का अपराधी माना जाता है। पप्पन बनाम इलाहाबाद राज्य ए.आई.आर. 1966 (59) के प्रकरण में पत्नी के बच्चा होने में कुछ ही दिन बाकी थे, तब पति ने उसको दो लातें मारी। इसके कारण 24 घंटे में पत्नी की मृत्यु हो गई, तो उसके गर्भ में पल रहे बच्चे की भी मृत्यु हो गई। न्यायालय ने अपराधी को धारा 304 एवं 316 के तहत दण्डित किया। भारतीय दंड संहिता की धारा 11 के तहत गर्भ में पल रहे बच्चे को (जो बोल सकता है यदि जन्म ले लेता) व्यक्ति माना है। यदि ऐसे व्यक्ति की हत्या हो जाती है, तो अपराधी को धारा 304 एवं 316 के तहत दण्डित किया जा सकता है। यदि जीवित या मृत बच्चे को गुप्त तरीके से गायब कर दिया जाता है, तो यह कानूनन अपराध है। एक मामलें में गर्भवती स्त्री जंगल गई और वहीं उसने बच्चें को जन्म दिया। जन्म के पश्चात ही बच्चे की मृत्यु हो गई, तो औरत मृत शरीर को छोड़कर वापस आ गई। इस प्रकार मृतक शरीर को छोड़ना गुप्त व्ययन नहीं है।

महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए बीसवीं सदी में कई कानून बनाए गए है। इन कानूनों के माध्यम से महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों को रोकने में हालांकि पूर्ण सफलता नहीं मिली है तथापि उन पर अंकुश अवश्य लगाया जा सकता है। हम इस बार से यह स्तम्भ महिलाओं को उनके काननी हक की लड़ाई दिलाने के लिए प्रारम्भ कर रहे है। आप लोग अपने विचार हमें अवश्य भेजें। आपके विचार ही हमारी पूंजी है।

घने जंगलों का साया था

घने जंगलों का साया था
उसके बीच में तुम्हारा चेहरा ही नजर आया था।
हमने सोचा था न समझा था,
मुफ्त में दर्द को पाया था।
जिंदगी छोड आई थी हमें कोसों पीछे,
रह गई थी तो सिर्फ तेरी यादें।
रूक गई थी जिस्म में जो कुछ सॉसें,
उन को भी सता जाती थीं पुरानी बातें।
बाद मे देती हैं यें नसीहतें "मश्शो"
न जाना इन हसीन चेहरों पे,
ये दिल मे दर्द को बसाते है।
न अश्क रूकते हैं, दिल का दर्द थमता है।
जिंदगी मेहमा एक रोज की हो जाती है,
और आखिरकार ये दुनिया से चले जाते हैं।

जिंदगी में क्या–क्या न पाया हमने

जिंदगी मे क्या–क्या न पाया हमने
कभी खुशियों को कभी गम को गले लगाया हमने
कभी बदनामियों को भी दामन में छुपाया हमने
कभी अश्कों को भी ऑखों में बसाया हमने
कभी तन्हाई को भी दोस्त बनाया हमने
जिन्दगी में हर दर्द–खुशी को महसूस किया है

मुसर्रत जहॉ "मश्शो"

eSa vkSj pkWn

घने पेडों के झुरमुट के बीच
ऊपर चमकता
पूरा चॉद
क्या कह रहा है??
वह ये कहता है शायद
बेचेहरा लोगों की
घनी भीड से
बाहर निकलो
दूर फैले विस्तृत मैदान में जाओ
खुले आकाश के नीचे,
जहॉ
तारों की रोशनी भी हो,
और दूर तक केवल शान्ति हो छायी
जहॉ तुम्हारी हल्की
परछाई के अतिरिक्त
कोई न हो,
तब मुझे देखो जी भर कर
क्योंकि !
सच तो ये है,
अकेले तुम भी हो, अकेला मैं भी हूॅं।

इनआम आज़मी
कालेज ऑफ मैनेजमेण्ट एण्ड ई0 इला0

कम्प्यूटर कहाँ सीखें ?

प्रत्येक विद्यार्थी के सामने सबसे पहली समस्या कम्प्यूटर सीखते समय यह आती है कि वह सही संस्थानों की तलाश कैसे करें? क्योकि आज हर गली मुहल्लों मे कम्प्यूटर संस्था ऐसे उगती आ रही है जैसे कि कुकुरमुत्ते के पौधे। और ये कुकुरमुत्ते के पौधे ज्यादा समय तक स्थिर नही रहती और रातोंरात गायब हो जाती है और छात्रों के भविष्य के साथ–साथ उनके साथ आर्थिक रूप से भी धोखा कर जाती है।

जिससे छात्रो के सामने सबसे बडी समस्या यही रहती है कि एक विश्वनीय संस्था का चुनाव कैसे करें? अतः छात्रों को यह बताना आवश्यक है कि उन्हें सही संस्थान की तलाश कैसे करनी चाहिए ।इसके लिए आपको निम्न पहलुओं पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

१. सबसे पहले इस बात का पता लगाइये कि किस संस्थान की छवि सभी की नजर में सबसे बेहतर है फिर ये कि संस्थान इस क्षेत्र में कब से है?यह किस क्षेत्र में काम करती है?आदि–आदि।

२ .दूसरी महत्वपूर्ण बात यह कि संस्थान के पुराने छात्रों का संस्थान के विषय में क्या कहना है?यदि पुराने छात्र संस्थान से पूर्ण रूप से संतुष्ट होते है तो ही समझिये कि संस्थान बेहतर है। जितने ज्यादा छात्र संस्थान के कार्य से संतुष्ट होंगे संस्थान उतना ही बेहतर होगा। साथ ही पुराने छात्रों का रिकार्ड भी पता चल जायेगा और संस्थान की विश्वसनीयता भी पता चल जायेगी।

३. तीसरा महत्वपूर्ण पहलू यह कि संस्थान के पाठ्यक्रम का पता करना। अर्थात् वह संस्थान कौन से पाठ्यक्रम चलाता है, किस तरह के पाठ्यक्रम है, आदि–आदि। संस्थान के पाठ्यक्रमों में विविधता होनी चाहिए ।जिस संस्थान में लम्बी अवधि के पाठ्यक्रम की व्यवस्था होती है वही संस्थान विश्वसनीय साबित होते है। क्योंकि कम समय में कम्प्यूटर सिखाने का दावा करने वाले संस्थान जल्दी ही बाजार से गायब हो जाते है, और छात्रों के भविष्य से खिलवाड कर जाते है। इस तरह अन्य छात्र ये नहीं समझ पाते कि किस संस्थान में प्रवेश

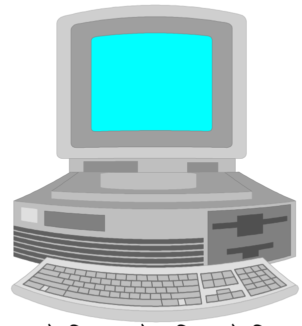

लिया जाये कि उनके भविष्य से खिलवाड न हो पाये।

साथ ही पाठ्यक्रम उद्योग से सम्बन्धित होना चाहिए और उनकी पद्धति लचीली होनी चाहिए। जिससे वह वर्तमान की आवश्यकताओं को स्वीकार सके।

४. किसी भी संस्थान में प्रवेश लेते समय इस बात की भी जानकारी होनी चाहिए कि वह संस्थान किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से जुडा है कि नहीं या किसी अन्य संस्था से जुडा है तो वह संस्था विश्वसनीय है कि नहीं। साथ ही इस बात की भी जानकारी होनी चाहिए कि संस्थान द्वारा दिया जाने वाला सर्टिफिकेट या डिप्लोमा किस किस्म का है? अगर किसी विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त है तो उसकी पूरी जानकारी होनी चाहिए ।साथ ही उस संस्थान के किस संस्था या विश्वविद्यालय से अनुबंध है?

५. जिस संस्थान द्वारा अच्छे छात्रों का चुनाव होता है वही संस्थान विश्वास के योग्य है। क्योंकि इससे किसी भी छात्र को अपने कैरियर को बनाने में मदद मिलती हैं। अतः यदि कोई संस्थान प्रवेश के पहले किसी भी प्रकार का टेस्ट लेता है तो ये नहीं समझना चाहिए कि यह किसी प्रकार का दिखावा है बल्कि इस प्रकार के टेस्ट में हिस्सा लेना चाहिए। इससे आपको अच्छा प्लेसमेंट मिलेगा जो आपके लिए कैरियर बनाने में सहायक होगा।

६. अगर आपको एक विश्वसनीय कम्प्यूटर संस्थान मिल गया है तो अब अन्य छोटी–छोटी बातों की भी जानकारी कर लेनी चाहिए। जैसे– संस्थान में कुल कितने कम्प्यूटर है, सॉफ्टवेयर कैसा है? आदि–आदि। लेकिन ये नहीं सोचना चाहिए कि ज्यादा कम्प्यूटर होने से ही संस्थान में प्रवेश लेना चाहिए, बल्कि ये देखना चाहिए कि संस्थान का वातावरण कैसा है? सॉफ्टवेयर वैद्य हैं कि नहीं।

इस प्रकार उपरोक्त दी गयी जानकारी के आधार पर ये ज्ञात किया जा सकता है कि संस्थान छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड तो नहीं कर रहा? और आप एक विश्वसनीय संस्थान में प्रवेश ले कर कम्प्यूटर शिक्षा ग्रहण कर सकते है।

Hkkjrh; jk'Vªh; i=dkj egkla?k

(इण्डियन नेशनल जर्नलिस्ट फेडरेशन)

''पत्रकार भवन'' गॅधियांव, करछना, इलाहाबाद–212301

आत्मीय बन्धुवर,

महासंघ के गठन का उद्देश्य देश भर के पत्रकारों की रचनात्मक प्रतिभा का विकास, आर्थिक व सामाजिक उन्नयन प्रतिष्ठा व सम्मान की सुरक्षा, उनके मौलिक अधिकारों की रक्षा को ध्यान में रखकर किया गया है।

आप किसी भी पत्रकार संगठन में हों और वहॉ निष्ठा पूर्वक सक्रिय हों तो आपका महासंघ में स्वागत है। अपने मूल संगठन में बने रहकर भी आप इस महासंघ को वैचारिक आन्दोलन के रूप में आगे बढाने में पूर्ण सहायक हो सकते हैं।

आप अपना पूर्ण विवरण पत्रकारिता का अनुभव एवं वर्तमान सांगठनिक गतिविधियों की जानकारी सहित सादे कागज पर आवेदन पत्र पता लिखा टिकट युक्त लिफाफों के साथ भेज सकते है। सभी पंजीकृत सदस्यों को परिचय पत्र दिये जायेंगें। आपकी समस्याओं के समाधान हेतु महासंघ अपने स्तर से अग्रिम कार्यवाई करेगा। इसके लिए–

1. प्रत्येक पत्राचार के लिए जवाबी पोस्टकार्ड या जवाबी लिफाफा अवश्य भेजें। जिस पर आपका पंजीयन क्रमांक लिखा हो।
2. महासंघ की सदस्यता के सदस्यता फार्म व अन्य विवरण प्राप्ति हेतु टिकटयुक्त पता लिखा लिफाफा भेजें।
3. तहसील व जिला स्तरीय बैठकों/कार्यक्रमों का दायित्व संयोजकों पर होगा। आपकी पहल का स्वागत है। आपके गरिमामय प्रांजल सुझाव भी सादर आमंत्रित हैं।

प्रयाग मे गंगा–स्नान की महिमा

गंगा भारत की सर्वाधिक पवित्र नदी ही नहीं है। देश के विभिन्न प्रदेशों के निवासियों की आत्मा को एक सूत्र में संगठित रखने वाली सबसे प्रभावीशक्ति भी रही है। हिमालय से लेकर सागर तक प्रवाहित उसकी उज्जवल धारा के किनारे उपस्थित कितने ही ऐसे केन्द्र बनते रहे है, जहाँ विभिन्न भाषा–भाषी लोग निरन्तर एकत्र होते रहे हैं। और भारतीय संस्कृति को पुष्ट करते रहे है। उसके जल को बहुसंख्यक नहरों और बॉधों के द्वारा विस्तृत भू–भाग में फैलाकर और नियन्त्रित कर भौतिक समृद्धि के कितने ही द्वार खोले गए। यहॉ तक कि उसकी धारा नाम मात्र को रह गई है। यहीं नहीं, भौतिक लाभ की दृष्टि से अन्धाधुन्ध कारखाने खोलकर और उनके रासायनिक द्रवों को उसकी ध ाारा में मिलाया गया और तटीय नगरों एवं ग्रामें के दूषित जल को भी उसी में गिराया गया– यहॉ तक कि उसके निर्मल रोग नाशक जल में प्रदूषण की गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गईं। फिर भी उसकी आध यात्मिक शक्ति में कोई कमी नहीं आई है। वह भारत की एकात्मकता को पुष्ट ही करती है। और आज भी कर रही है। गंगा की उक्त विशेषता का कारण भारतीय ऋषियों की वह दूर–दृष्टि है, जिसने गंगा की प्रतिष्ठा भारतीय जनमानस में एक नदी के रूप में नहीं– एक देवी के रूप में की है।कौन जानता है कि गंगा देवी ने नदी के रूप मे भगवान विष्णु के चरणों के प्रक्षालित जल से जन्म लिया है। और राजा भागीरथ की तपस्या के फलस्वरूप उनका अवतरण पहले भगवान शंकर जटाजूट में हुआ, फिर वे वहॉ से उतर कर भारत की धरती पर आईं। भागीरथ के पूर्वज राजा सागर के मृत पुत्रों को मुक्ति उन्हीं के जल से मिली।

भारतीय ऋषियों द्वारा रचित साहित्य से ज्ञात होता है कि हिमालय के कैलाश पर्वत पर खडे भगवान् शंकर की जटाओं में गंगा देवी ने वैशाख शुक्ला तृतीया के दिन अवतरण किया था और वहॉ से वे भारत की भूमि पर ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को उतरी थी। यही कारण था कि उस दिन गंगा दशहरा का उत्सव भारतीयों द्वारा बडी श्रृद्धा और उमंग के साथ मनाया जाता है।

ऋृग्वेद मे एक नदी सूक्त है, जिसमे भारत की नदियों की देवी–रूप मे स्तुति हुई हैं। वहॉ सबसे पहले गंगा का ही स्मरण किया गया है। महाभारतऔर पद्मपुराण आदि पुराणों में गंगा

की महिमा और पापियों को पवित्र करने वाली उसकी असीम शक्ति का विस्तार से वर्णन है। स्कन्द पुराण मे गंगा के सहस्त्र नामों का उल्लेख है। विष्णु पुराण के अनुसार गंगा का नाम लेने या सुनने, उसे देखने, उसका जल पीने, छूने, उसमे स्नान करने या सौ योजन की दूरी से भी उसके नाम का उच्चारण मात्र करने से तीन जन्मों के पाप नष्ट हो जाते है। भविष्य, मत्स्य, गरूड, वाराह आदि पुराणों में घोषित किया गया है कि हरिद्वार, प्रयाग और गंगा के समुद्र में मिलने के स्थान में स्नान करने से मनुष्य को आवागमन से छुटकारा मिल जाता है।

गंगा की पवित्र करने की शक्ति यहॉ तक मानी जाती है कि अविश्वासी और नास्तिक व्यक्ति भी यदि संयोग वश गंगा के निकट मरता है या उसका अन्तिम अवशेष गंगा की धारा में प्रवाहित होता है, तो उसके पाप विनष्ट हो जाते है। और उसे सद्–गति मिलती है।

श्रीमद्–भागवद्–गीता में भगवान् कृष्ण अपने विराट् स्वरूप का दर्शन जब अर्जुन को कराते है और अपने अन्य प्रत्यक्ष विग्रहों का वर्णन करते हैं, तो वे स्पष्ट कहते हैं कि ''नदियों में मैं गंगा हूॅ।'' भारतीय समाज में किसी भी देवी–देवता की पूजा हो या भवन निर्माण, गृह–प्रवेश या किसी प्रकार का आयोजन हो, उसके प्रारम्भ में जल छिडक कर स्थान या व्यक्तियों को शुद्ध किया जाता है। उस समयकुएँ, तालाब, नल या किसी भी नदी का जल उपलब्ध हो, उसमें तीर्थों का आवाहन करने का जो मन्त्र पढा जाता है, वह गंगा के ही नाम से प्रारम्भ होता है। जैसे ऊॅ0 गंगे च यमुने आदि। तीर्थ राज प्रयाग मे गंगा–स्नान का सब स्थानों से अधिक महत्व माना गय है। कहा है कि सैकडों पाप करने वाला व्यक्ति भी यदि प्रयाग में गंगा–स्नान कर लेता है, तो उसके सभी पाप दूर हो जाते है। गंगा में स्नान करने या उसका जल पीने से पूर्वजों की सात पीढियॉ मुक्त हो जाती है।मृत मनुष्य की अस्थियॉ जितने समय तक गंगा–जल में रहती है, उतना ही अधिक उसकी आत्मा को पर–लोक में शान्ति और प्रतिष्ठा मिलती है।

गंगा की मूल धारा ''स्वर्ग–लोक'' में प्रतिष्ठित है, जिसका नाम है– ''मन्दाकिनी'' ।पृथ्वी की गंगा– ''भागीरथी'' नाम से प्रसिद्ध है। और उसकी तीसरी धारा पाताल में पहॅुचती है।जिसे ''भोगवती'' नाम से जानते है। इस प्रकार पापियों को पाप से मुक्त करने के लिए गंगा देवी–तीनों लोकों में विद्यमान है। गंगा में स्नान करते समय गंगा के नामों का उच्चारण करना चाहिये। गंगा की मिट्टी और

जल को हाथों में लेकर प्रार्थना करनी चाहिए कि आप मेरे पापों को दूर करें, जिससे मैं इस लोक में प्रतिष्ठा पाकर पर–लोक में अच्छा स्थान पाऊॅ। पितरों को संतुष्ट करने के लिए हाथ में कुशा, पुष्प अक्षत आदि लेकर सूर्य भगवान के सम्मुख गंगा की धारा में अर्पित करना चाहिए। और यह कामना करनी चाहिए कि इस तर्पण द्वारा पितर लोग तृप्त हों। गंगा के तट पर खडे होकर, जो दूसरे स्थानों की प्रशंसा करते हैं या मन में ओछे विचार लाते हैं, उन्हें दोष लगता है। फलस्वरूप इस संसार मे कष्ट पाते है।और मरने के बाद नरक मे जाकर दःख पाते है।गंगा में स्नान की

प्रशंसा करते हैं या मन में ओछे विचार लाते हैं, उन्हें दोष लगता है। फलस्वरूप इस संसार

मे कष्ट पाते है।और मरने के बाद नरक मे जाकर दःख पाते है।गंगा में स्नान करने से स्वास्थ्य लाभ तो होता ही है, पुष्य भी मिलता है।शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को स्नान करने से

` फल नित्य के सामान्य स्नान से सौ गुना अधिक मिलता है।संक्रान्ति के अवसर पर करने से स्वास्थ्य लाभ तो होता ही है, पुष्य भी

मिलता है।शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को स्नान करने से फल नित्य के सामान्य स्नान से सौ गुना अधिक मिलता है।संक्रान्ति के अवसर पर

करने से स्वास्थ्य लाभ तो होता ही है, पुष्य भी मिलता है।शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को स्नान

करने से फल नित्य के सामान्य स्नान से सौ गुना अधिक मिलता है।संक्रान्ति के अवसर पर गंगा स्नान का फल सहस्त्र ंगुना अधिक पुष्य दायक होता है। कुम्भ पर्व के अवसर पर गंगा स्नान का महत्व कितना अधिक है, इसे शब्देंा में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। इस काल गंगा स्नान का फल सहस्त्र ंगुना अधि क

पुष्य दायक होता है। कुम्भ पर्व के अवसर पर

गंगा स्नान का महत्व कितना अधिक है, इसे शब्देंा में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। इस काल में गंगा देवी का विधिवत् ध्यान करना चाहिए। गंगा के मन्त्र और ध्यान– पूजनादि का विस्तृत विधान तन्त्र–शास्त्र में मिलता है।जो बडा ही लाभकारी है। गंगा देवी की इसी महिमा से प्रभावित होकर भारत की कोई भी नदी या जलाशय हो, उसमें स्नानादि करते समय भारतीय लोग गंगा का ही नाम लेते है। और इस प्रकार सारे देशवासी एकात्म–कता के सूत्र प्रभावित होकर भारत की कोई भी नदी या जलाशय हो, उसमें स्नानादि करते समय भारतीय लोग गंगा का ही नाम लेते है। और इस प्रकार सारे देशवासी एकात्मकता के सूत्र मे सहज ही जुड जाते है।

प्रिय संजू
आया फिर से वह दिन आज
खिल उठे कमल देख चांद को आज
प्यार है किसी की नजदीकियों का अहसास
वह चाहे दूर या पास।
तुम्हारी : प्रीति ंसिंह, कटरा

uo o"kZ dh eaxy dkeuk

सन्त कुमार सिंह ''पवित्रा''
भू0 पू0 सैनिक, ई0डब्लू0एस0
17/34 प्रीतम नगर, इलाहाबाद।
दूरभाष–610049, 636335

नए वर्ष में हर प्राणी का,
सुबह नयी हर शाम नयी हो।
बस जायॅ हर घर में लक्ष्मी,
हर व्यक्ति की चाह नयी हो।
खुशियॉ सब के घर भर जावे,
शिक्षा हर नर–नारी पावे।
हरि दर्शन दें हर प्राणी को,
साधक का हर मंत्र नया हो।।
रहे न कोई यहॉ भिखारी,
न कोई हो भ्रष्टाचारी।
प्रेम भाव सबके मन जागे,
ज्ञानी का हर तंत्र नया हो।
सत्ता हो सब गुणवानों की,
कीर्ति प्रखर हो विद्वानों की।
देश चले उन्नति के पथ पर,
अभियन्ता का यंत्र नया हो।।
गीता वातायन में गॅूजे,
मात–पिता हर घर में पूजें।
संस्कृति का उत्थान करें हम,
भारत का इतिहास नया हो।
वस्त्र नए हों सबके तन पर,
सैनिक का हर शस्त्र नया हो।
भारत मॉ की रक्षा खातिर,
सरहद पर हर अस्त्र नया हो।।
वाक्–शक्ति हों अधिवक्ता में,
कविता का संचार नया हो।
देश भक्ति सब के मन जागे,
श्रमिकों में उत्साह नया हो।।
हर घर में फैले उजियाला,
सन्त बनें जग का रखवाला।
ऊॅचा सबका रहे मनोबल,
चेहरे पर मुस्कान नयी हो।।

मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है। **मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है**

विगत पॉच वर्षो से समाज सेवा के लिए पूर्णतः समर्पित

जी.पी0एफ0सोसायटी

277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद

आपसे विभिन्न स्थानों पर संचालित

0 अंध विद्यालय 0 विकलांग केन्द्र 0 शिक्षा केन्द्र के लिए

आर्थिक/सामाजिक/शारीरिक/कपड़े या अन्य सामग्री की सहयोग की अपील करता है।

प्रस्तावित अनाथालय व बृद्धआश्रम : ग्राम –टीकर, पोस्ट–टीकर, (पैना) जिला –देवरिया

ईमानदारी के गुण

प्यारे बच्चों– आओ! कल्पना के संसार मे तुम्हारा स्वागत है। हमें पता है तुम लोगो को कहानियां सुनना बहुत पसंद हैं। पर क्या आप सब केवल कहानियॉ सुनते ही है या उन्हें याद कर उनसे कुछ सीखते भी हैं। हम आप को कुछ ऐसी ही कहानियां सुनायेंगें जिनसे आपका मनोरंजन तो होगा ही साथ ही कुछ नया सीखने को भी मिलेगा।

तुम्हारी दीदी
ज्योति नगरिया

एक गरीब लकडहारा था। वह रोजाना लकडी काटने जंगल जाता था। उस लकडी को बेचकर वह अपना और अपने परिवार का गुजारा करता था। एक बार वह नदी के किनारे एक पेड से लकडी काट रहा था। एकाएक उसके हाथ से कुल्हाडी छूटकर नदी में गिर गयी। बेचारा लकडहारा तैरना नहीं जानता था। इससे लकडहारा बहुत ही दुःखी हो गया। वह सोच रहा था कि वह कुल्हाडी कैसे निकाले। उसी समय नदी के जल में हलचल हुई और लकडहारे ने देखा कि नदी में से एक जलपरी निकली। उसकी ऑखें गहरे समुद्र के जल की तरह थीं। उसके घने लम्बे, चमकदार, बाल सुनहरे बादलों की तरह उसके कन्धों पर फैले थे। उसने एक चमकदार मुकुट पहना था। आश्चर्य से लकडहारे का मुॅह खुला का खुला रह गया और उसके मुॅह से एक भी शब्द नहीं निकला। वह केवल उसे एकटक देखता ही रहा। जलपरी ने उससे कहा– घबराओ नहीं मै। इस नदी में रहती हूॅ, मैं जलपरी हूॅ। तुम इतने दुःखी क्यों हो?

लकडहारे ने डरते –डरते कहा– मेरी कुल्हाडी नदी के जल के भीतर गिर गयी है। परी बोली– घबराओ नहीं मैं अभी निकाल देती हूॅ। ऐसा कहकर उसने जल में डुबकी लगाई और तुरन्त एक सोने की कुल्हाडी लेकर बाहर आ गयी। कुल्हाडी धूप में चमक रही थी। और उसकी चमक से लकडहारे की ऑखें चकाचौंध हो गई। क्या यही तुम्हारी कुल्हाडी है? जलपरी ने पूछा।

''नहीं''लकडहारे ने कहा– यह मेरी कुल्हाडी नहीं है।

जलपरी ने फिर जल में डुबकी लगाई। इस बार वह एक चॉदी की कुल्हाडी लेकर बाहर आयी। कुल्हाडी हजारों तारों की चमक से चमक रही थी।

क्या यही तुम्हारी कुल्हाडी है? जलपरी ने पूछा।

लकडहारे ने कहा– ''नहीं यह कुल्हाडी भी मेरी नहीं है। मैं एक गरीब आदमी हूॅ। इतनी मूल्यवान कुल्हाडी मेंरी कैसे हो सकतीं है?मेरी कुल्हाडी तो लोहे की है और उसमें लकडी की मूठ लगी है।''

परी मुस्कुरायी। इस बार एक लोहे की कुल्हाडी लेकर बाहर आयी।

''क्या यही तुम्हारी कुल्हाडी है?''उसने पूछा।

लकडहारे का चेहरा प्रसन्नता से खिल गया। उसने परी को धन्यवाद किया। और बोला ''यही मेरी कुल्हाडी है।''

परी फिर मुस्कुरायी। उसने कहा–''तुम एक अच्छे और ईमानदार आदमी हो। तुम्हारी इस लोहे की कुल्हाडी के साथ मैं तुम्हें सोने और चॉदी की कुल्हाडियों को भी पुरस्कार स्वरूप देती हूॅ।'' यह कहकर परी पानी में गायब हो गयी। लकडहारा बहुत ही प्रसन्न हुआ। सोने व चॉदी की कुल्हाडियों को बेचकर उसने अपने लिए सुन्दर घर बनवाया और अपने परिवार के साथ प्रसन्नता से रहने लगा।

मनुष्य की हथेलियाँ :-(ज्ञान का दर्पण हैं मानस रेखा)

मानस रेखा जीवन रेखा के उद्‌गम स्थान से निकलती है। मानस रेखा मनुष्य के मस्तिष्क का विकास, उसकी मानसिक क्षमता का और शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है। इस रेखा में हथेली के दो भाग हो जाते है। पहला ऊपर वाला भाग जीवन के मानसिक, आध्यात्मिक और नैतिक पक्षों का और नीचे वाला भाग उसकी शारीरिक व्यवहारिक तथा भौतिक क्षमताओं का संकेत देती है। मानस रेखा मनुष्यों के हाथ में भिन्न–भिन्न आकारों की होती है। किन्तु थोडा सा उभार लिये गोल आकार में जीवन रेखा के पास अर्थात् अंगूठे और तर्जनी अंगुली के बीच के भाग से निकलकर हाथ के दूसरे छोर तक पहुँचने वाली रेखा सर्वश्रेष्ठ होती है। ऐसी रेखा जातक को खगोलशास्त्र तथा गणित प्रविणता, चतुर, दूरदर्शी और कलाप्रेमी बनाती है। यदि यह रेखा हाथ में खूब गहरी, मनोहर, दोषरहित हो तो जातक शत्रु से भी धन पाने वाला, भाग्यशाली, नवीनगृह निर्माता, राजा की कृपा से भी धन पाने वाला साधुसंत प्रिय, सुशील, शिल्पज्ञ, दानी, विद्वान, सर्वप्रिय, शांतस्वभाव, अधिकार सम्पन्न, सत्यवादी तथा पुत्र–स्त्री वाहन आदि से सुखी सम्पन्न होते हैं। यदि यही रेखा मलीन या छिन्न–भिन्न विकृत या अविकसित अवस्था में हो तो जातक मंदबुद्धि, मानसिक रोगी, घबराहट, ह्रदय रोग, त्वचा रोग तथा घमण्डी और गलत निर्णय लेने वाले होते है। तथा उनमें गम्भीरता और सहनशीलता बिल्कुल भी नहीं होती।वास्तव में मनुष्य हाथ की सर्वाधिक महत्वपूर्ण रेखा मानस रेखा है, मानस रेखा मनुष्य के चरित्र को केन्द्रीय शक्तियों को जानने और समझने को दिष्ट से मानस रेखा का अध्ययन महत्वपूर्ण होते हैं।प्रायः मानस रेखा जीवन रेखा से मिलकर ही प्रारम्भ होती है। किन्तु कभी–कभी या उससे थोडा हटकर भी चलती है। यानी इन दोनों रेखाओं में थोडा सा अन्तर रहता है।यदि यह अन्तर सामान्य रूप से थोडा है, तो यह मनुष्य में आत्मविश्वास और किसी भी कार्य को कुशलता पूर्वक करने की शक्ति दर्शाता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः चतुर एवं प्रबल आत्मविश्वासी होते है। किन्तु जब यह अन्तर अधिकर हो जाता है तो व्यक्ति में अपनी शक्ति, बुद्धि व गुणों का गलत मूल्यांकन उत्पन्न करता है, जिसके कारण ही उसे निराशा तथा असफलता मिलती है। जिसके कारण वह दुःखी होते है। यदि मानस रेखा

जीवन रेखा को स्पर्श करती हुई गुरू के स्थान से प्रारम्भ हो तथा लम्बी भी हो तो ऐसे मनुष्य की मानसिक शक्ति अत्यंत प्रखर होती है। तथा वह मनुष्य बुद्धिमान और दूरदर्शी होता है।हर एक काम को खूब सोचविचार कर करता है। वह उच्च अधिकार को चाहता है।और पाता भी है। परन्तु अधिकार पाकर वह उसका दुरूपयोंग नहीं करता। यदि मानस रेखा से कुछ छोटी–छोटी बारीक रेखायें ऊपर की ओर निकलकर ह्रदय रेखा की ओर जाए किन्तु उन्हें छुए नहीं तो ऐसे व्यक्ति मानसिक रूप से भ्रष्ट और दिखावा करने वाले होते है।वे किसी भी सुन्दर सूरत को देखकर उसकी ओर आकर्षित होते है तथा उसे प्राप्त करने के लिए तरह–तरह के नाटक रचा करते है।किन्तु यह सब दिखावा केवल वासना के कारण ही होता है।वास्तव में सच्चा प्रेम नही होता है।मानस रेखा पर दीप, कटाव, क्रास, बिन्दु आदि के चिन्ह हथेलियों पर विपरीत प्रभाव ही डालते है। यह चिन्ह उस काल में मनुष्य की मानसिक क्षमताओं को घटाते हैं। तथा उसके मन में ग्रन्थियों को उत्पंन्न करते है और शरीर को रोगग्रस्त करते है। मानस रेखा पर दीप चित्त को एकाग्रता में कमी, मानसिक सभ्रम और मानसिक क्षमता का ह्यस का चिन्ह है, दीप के कला–खण्ड को जबरदस्त मानसिक तनाव और उत्तेजना से गुजरना पडता है। बिन्दु के चिन्ह मानसिक रोगणता गंभीर किस्त को भी हो सकता है। मानस रेखा पर त्रिकोण जैसी आकृतियॉ डाक्टर, न्यायाधीश तथा वैज्ञानिक बुद्धि प्रदर्शित करती है। ऐसे मनुष्य को आय भरपूर होती है लेकिन उसका स्वभाव खर्चीला होता है।

इति श्री

यदि आपके भरपूर श्रम से कमाई गयी लक्ष्मी घर में नहीं रूकती और गरीबी में डूबे रहते है तो अपने मकान अथवा झोपडी के मुख्य द्वार पर एक चौकोर तुलसी की चौबारा बनवायें जिसके बीच अन्दर (नीचे का भाग) खोखला हो। उसमें मिट्‌टी भरकर लाल कमल का पौध लाकर जो तालाब अथवा नाले मे उगता मिलेगा, लगा दें। और रोजाना पानी लगाकर सेवा करें। चन्द दिनों में कमल का पौध हरा हो कर खडा हो जायेगा। पौधे के हरे हो जाने के बाद लक्ष्मी आपके घर मे बनी रहेगी और खुशहाली लायेगी।

आवश्यकता है

मासिक पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** हेतु

0 संपादक 0 संवाददाता
0 विज्ञापन प्रतिनिधि
0 विज्ञापन एजेंट

30 मार्च तक हमें लिखें।

आपकी जुबान

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री स्तरीय और रोचक है

प्रिय भाई गोकुलेश्वर कुमार जी,

आपके द्वारा प्रेषित विश्व स्नेह समाज पत्रिका का जनवरी 2002 का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री स्तरीय और रोचक है। सबसे बडी बात तो यह है कि इसमें हर उम्र, हर वर्ग और हर कला क्षेत्र के पाठकों की रूचियों का ध्यान रखा गया है। छोटी सी पत्रिका में अधिक से अधिक सामग्री संग्रहित है। यह निश्चय ही समाज में एक नवीन वैचारिक क्रांति की दिशा में अग्रणी रहेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं पत्रिका की सफलता और उसकी निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक कामना करती हूँ।

भवदीया,

विजय लक्ष्मी ''विभा''

149 जी/2, चकिया, इलाहाबाद–211016

एक कॉलम गृहिणियों के लिए भी रखें

सेवा में,

सम्पादिका महोदया,

फरवरी का अंक पढ़ा। पढ़कर खुशी हुई, खासकर आपके ज्योतिष से सम्बन्धित लेख को पढकर। आगे भी ऐसे ही लेखों का प्रकाशन अवश्य करियेगा जिसमें ज्योतिषी से सम्बन्धित जानकारी हो। सम्पादिका महोदया जी से निवेदन है कि वे एक कॉलम गृहिणियों के लिए भी रखें। क्योंकि हम गृहिणियॉ रेसिपी (व्यंजन) से सम्बन्धित ज्यादा पसंद करती हैं। अतः उनके लिए भी एक कॉलम निकालें। साथ ही रजनीश तिवारी जी की कहानी महुवा भी काफी पसंद आयी है।

श्रीमती संगीता मिश्रा

खुल्दाबाद, इलाहाबाद।

फरवरी का अंक वास्तम में मजेदार था

सेवा में प्रधान संपादक

मैं विश्व स्नेह समाज का नियमित पाठक हुं। मेरी हमेशा यही ख्वाईश रही है कि यह पत्रिका दिन दुनी रात–चौगुनी प्रगति के पथ पर अग्रसित होवे। अब तक मेरी तमन्ना अधुरी थी किन्तु इस बार कुछ पुरी हुई। बस आप कृपा करके कवर पेज को सुधार को सुधार दे तो बात ही बन जाये। मेरे सभी दोस्त इस बात की शिकायत करते है कि इसका कवर ठीक नहीं है। मैटर तो ठीक आ रहे है। लेकिन आज के दिखावे के संसार में कवर का अच्छा होना बहुत जरुरी है। संपादिका महोदया की कहानी खोई अस्मिता और दाउजी का कार्टुन बहुत पंसद आया। कार्टुन से सत्यता उजागर होती है।

रेनु श्रीवास्तव, आईईआरटी, इला0,श्री पी.एस. राय, कानपुर,सीमा श्रीवास्तव, राजरुपपुर, इला0,आकाश श्रीवास्तव, स्मिता सिंह, नीलम

कार्टुन बहुत मजेदार था

सेवा में

संपादक महोदया

फरवरी के अंक में छपा कार्टुन बहुत ही मजेदार था। वास्तव में नेता अपनी घोषणा करते वक्त यह भूल जाते है कि वे क्या इतनी धोषणाओं को कभी पूरा भी कर पायेगें की नहीं पत्रिका में प्रकाशित कहानी खोई अस्मिता, महुवा, अव मन ही नहीं करता वोट देने को, आदि बहुत पंसद आये।

कमलेश यादव, ब्रजेश यादव, आर0बी0 जैसल, सीमा यादव, विनय कुमार यादव मेजा रोड, इलाहाबाद

कविता संगम बहुत पंसद आयी

सेवा में संपादिका महोदया

आपके द्वारा प्रकाशित विश्व स्नेह समाज पत्रिका पढ़ी। इसमें मुझे प्रकाशित कहानियॉ, कविता खासकर बुद्धिसेन शर्मा की संगम लेख आदि भी अच्छे लगे। पत्रिका के स्थायी स्तम्भ भी काफी रोचक है। यह पत्रिका बच्चों से लेकर बुढ़ों तक सभी वर्गों में पंसद आने वाली है और सबके लिए रोचक व ज्ञानवर्घक सामग्री है। पत्रिका परिवार को नववर्ष ही हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

डा0 जे0बी0सिंह,

विधानसभा रोड, लखनऊ,

समय पर मासिक पत्रिका

"विश्व स्नेह समाज"

आपके दरवाजे पर। इस सुविधा का लाभ उठाइये और अपनी चहेती पत्रिका को घर बैठे पाइये। न खरीदने जाने की जरुरत न अंक खत्म होने का डर। बस नीचे दिये गए कूपन को भरकर हमें शुल्क सहित भेज दीजिए। आपको हमारे प्रतिनीधि द्वारा एक रसीद मिलेगी जिसको संभाल कर रखिए आपके सदस्य संख्या पर ड्रॉ निकाला जायेगा। जिसकी सूचना आपकों डाक द्वारा भेजी जाएगी। यह सीमा केवल 15 मई 2002 तक है। देर मत कीजिए

खुला ऑफर खुला ऑफर खुला ऑफर

पत्रिका के सदस्य बनिए और जीतिए हजारों रुपये के ईनाम

भारत में:मूल्य वार्षिक (साधारण डाक से) रु050/00

मूल्य वार्षिक : (रजि0 डाक) रु0 100/00

विदेशों में (नेपाल व भूटान को छोड़कर) साधारण डाक से रु0 150/00

आजीवन सदस्य : रु0 1100/00

भुगतान का माध्यम चेक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट। इलाहाबाद से बाहर चेकों के लिए रु0 20/00 अतिरिक्त राशि देय होगी।

कृपया चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें। **प्रधान संपादक**

मासिक पत्रिका "**विश्व स्नेह समाज**"

277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ,

नैनी, इलाहाबाद–8

भेजने वाले का नाम :.................................

डाक का पता : ....

igyk I;kj

बात उस समय की है जब मैं कक्षा 11 में पढता था। मैं बहुत ही संकोची स्वभाव का था, खासकर लडकियों से बातें करने में। एक दिन मैं सेकेण्ड फ्लोर पर था और उस दिन हमारी कालेज में छुट्‌टी थी। शायद अगले दिन कोई कार्यक्रम था। मैने नीचे की ओर देखा कि कुछ लडकियॉ नीचे से जा रहीं थीं।उनमें से एक लडकी काफी सुन्दर थी। वह मुझे बहुत ही अच्छी लगी। फिर मुझे जब भी मौका मिलता मैं उसे देखने के लिए सेकेण्ड फ्लोर पर खडा रहता। पता करने पर मालूम हुआ कि उसका नाम सीमा है।और वह कक्षा 10 की छात्रा है। मैं सीमा से बहुत कुछ कहना चाहता था, पर संकोच के कारण नहीं कह पाता था। एक दिन बहुत हिम्मत करके मैने खत लिखकर उसे देना चाहा, परन्तु उसने इंकार कर दिया। बाद में पता चला कि उसके घरवालों ने उसकी शादी तय कर दी है। सुनने में यह भी आया कि वह बहुत ही घमण्डी भी है। परन्तु वह चाहे जैसी भी हो वह मेरा पहला प्यार बनते–बनते रह गयी। और मैं उसे भूल भी नहीं सकूँगा। हालांकि उसकी शादी भी हो चुकी है। परन्तु मैं यही कामना करूँगा कि वह जहॉ भी रहे खुश रहे। आज मैं बी0ए0 की पढाई कर रहा हूँ, परन्तु किसी लड़की को देखकर उसकी याद आ ही जाती है।

संजीव कुमार विश्वकर्मा

छात्र यूईंग क्रिश्चियन कालेज, इलाहाबाद

,dutj

D;kdkIroesavkRek,agksrhgS\

vkRekvksa dk fujkyk lalkj

आत्मायें जो हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। हम उसे जानते हुए भी अस्वीकार करते है। लेकिन कहीं न कहीं हमारे जीवन में कुछ ऐसा होता है कि हमें भी उन पर विश्वास करना ही पडता है।

यह घटना ब्राजिल के साओ पाउलो राज्य के झपयिया नगर में रहने वाले कांटो के घर घटी थी। अप्रैल 1941 की सुबह कांटो साहब अपने घर में बैठे थे। अचानक उनके घर में पत्थरों की वर्षा होने लगी थी। यह क्रम दो–तीन दिन तक कुछ अंतराल में बराबर होतीं। कुछ समय बाद पत्थरो ंकी जगह हड्डियॉ, नारियल, आलू , प्याज आदि की बारिश होने लगी। इसका कोई समाधान नजर नहीं आ रहा था। आखिरकार इसे एक प्रेतबाधा मानकर एक पादरी को उपचार हेतु बुलाया गया। भूतों ने उनपर भी हमला बोल दिया। इस रहस्मयी घटना से सभी विस्मित व हैरान थे। काफी खोजबीन के बाद पता चला कि यह उपद्रव कांटो की नौकरानी फ्रासिस्को की आड में यह तांडव लीला चल रही थी। इस प्रकार यह रहस्यमय घेरे मे ंघिरा रहा।

प्रेतों का स्वरूप भिन्न–भिन्न होता है। कभी–कभी तो अपने विगत जन्मों के परिचितों पर भी अपना रूख दिखाते हैं। इसके पीछे उनकी अतृप्त इच्छायें समाई रहती है।

पुष्पा एक सुन्दर एवं आकर्षक युवती थी। उसका अपने पडोस के एक सयुवक अरूण से प्यार हो गया। प्रेम विवाह में परिणित होने से पहले ही वह असफल हो गया। समय के बढते प्रवाह ने उनकी स्मृति पर विस्मृति की मोटी परत चढा दी। बात आई गयी हो गयी। बीस वर्ष के लंबे अंतराल के बाद अरूण को दार्जिलिंग से पुष्पा का एक हस्तलिखित पत्र प्राप्त होने का हर्षमिश्रित आनंद प्राप्त हुआ। कुछ दिन के बाद पुनः एक पत्र मिला, जिसमें अरूण को दर्जिलिंग आने का प्रेमपूर्ण अनुरोध किया गया था। अरूण इस निवेदन को टाल न सका और उसने बनारस से दार्जिलिंग की ओर प्रस्थान किया। दार्जिलिंग के स्टेशन पर ही एक खाकी वरदीधारी ने उसकी अगवानी की और कहा कि मैं पुष्पा जी का ड्राईवर हूँ। मेरा नाम बहादुर सिंह है। पुष्पा जी ने आपको लाने के लिए ही अपनी कार भेजी है। बहादुर उसे एक आलीशान मकान में पहुॅचाकर गायब हो गया। बंगले की मल्लिका पुष्पा पूरे श्रृंगार के साथ उसके सामने आई और अभिवादन किया। अजमेर की पुष्पा आज ऐश्वर्य तथा वैभव की स्वामिनी बन बैठी थी। इसी बीच पुष्पा चॉदी के गिलास में दूध और सोने की तश्तरी में स्वल्पाहार लेकर उपस्थित हुई। उसने बडे ही विस्तार से अपनी आप बीती सुनाई। इतने में ही एक भयानक दृश्य दिखाई दिया। कंधे पर बन्दूख रखे और कमर में तलवार लटकाये एक आदमी उस कमरे में प्रवेश किया। तथा आव देखा न ताव पुष्पा पर गोली चला दिया। बचाने को आये बहादुर सिंह को भी उसने गोली मार दी। कमरे में दो मर्मभेदी चित्कार गूजने के बाद तनावयुक्त उदासी छा गयी। आलीशान बंगले का वह कमरा खून से लथपथ दो लाशों से भरा बडा ही वीभत्स्व दिख रहा था। अरूण ने उसे अपने शब्दों में व्यक्त किया– इस घटना से परेशान मै भागता हुआ पुलिस स्टेशन पहुॅचा और इंस्पेक्टर को बीती रात की सारी घटनाएं एक सॉस में कह सुनाई। इसके विपरीत इंस्पेक्टर ने मेरी बात पर कोई ध्यान नही दिया। उसने मुझे बताया कि यह कुछ नहीं सिर्फ प्रेत लीला है। इसके एक माह पूर्व किसी व्यक्ति ने इसी तरह की रिर्पोट दर्ज करायी थी। इंस्पेक्टर जब मेरे साथ अटैची लेने गया तो वहॉ का परिवेश देखकर बडी हैरानी हुई। वहॉ एक भुतहा खंडहर था। और वहॉ लाल रेशमी कपडे में लिपटा हुआ एक पैकेट मिला, जिसे खोलने पर उसमें सिंदूर की डिबिया तथा लाल चूडियॉ मिली। बीती रात पुष्पा इस पैकेट को मेरी ओर बढा रही थी कि हत्या की वारदात घट गयी। आज वह भुतहा मकान कलकत्ता के किसी सेठ का आलीशान होटल है।

श्रीकान्त मिश्रा

सीरियस फिल्मों में काम करना नहीं छोड़ूगी- uafnrk

अपनी अदाकारी की गहरी छाप अक्स और पिता में छोड़ चुकी अभिनेत्री नंदिता दास ने यह साबित कर दिया है कि कमर्शियल सिनेमा का पूरा सेटअप उन्हें रास आ रहा है।

हमारें मुम्बई ब्यूरों से एक मुलाकात।

फिल्म 'अक्स' की तरह फिल्म 'पिता' में भी आप पत्नी के रोल में नजर आयी है। आपको ऐसा नहीं लगता है कि ऐसे रोल में आप टाइप्ड हो रही है?

यदि ऐसे करेक्टर की पूरी सोच अलग हो तो मुझे हर फिल्म में किसी की 'वाइफ' का रोल करने में कोई हर्ज नहीं आता है। 'फायर', अक्स, बंवडर और पिता में मैं किसी न किसी की पत्नी बनी हुं, लेकिन ये सारे अलग–अलग टाइप के करेक्टर है। ऐसे रोल को लेकर मैं अपनी आपत्ति तब दर्ज करुगी, जब इनमें रुटीन टाइप की बातें मुझे दोहराने के लिए कहा जायेगा।

फिल्म 'पिता' में निभाये गये अपने किरदार के बारे में खुद आप क्या सोचती है?

मुझे इस प्ले करने में मजा आया। यह बिल्कुल अलग–थलग करेक्टर नहीं था, पर मैंने जरुर इसे पहली बार किया। कामर्शियल सिनेमा की अपनी अलग मजबूरी होती है। कई बार कई दृश्य बनावटी से लगते है और आपको उन दृश्यों का एक हिस्सा बनना पड़ता है। मैने इन सब बातों को बहुत सहज रुप से लिया। मुझे इसके हीरों संजय दत्त के साथ ताल–मेल बैठाने में कोई परेशानी नहीं हुई। पिता के इस रोल का ऑफर महेश ने पूरे आत्मविश्वास के साथ दिया था।

इधर कमर्शियल फिल्मों में आपकी बढ़ती व्यस्तता का क्या संकेत समझा जाये?

मैंने ऐसा कभी नहीं कहा कि मैं कर्मशियल फिल्मों में काम नहीं करुगी। कर्मशियल फिल्म मैंकिग की कुछ बातों के साथ मैं शायद ही एडजस्ट कर पाऊं। शुरु से ही मैं फिल्मेंा में ऐसे रोल करना चाहती थी, जिसमें कुछ कर दिखाने का भरपूर मौका मिले पर हर बार आपकी इच्छा और शर्तो पर सारी बातें तय नहीं होती है। कमर्शियल फिल्मों में काम करना मैंने यही सोच कर शुरु किया है लेकिन इस वजह से मैं गंभीर फिल्मों का साथ कभी नहीं छोड़गी।

इन दिनों आप कितनी कमर्शियल फिल्मों में काम कर रही है?

बस, चार–पांच फिल्में है। एक वक्त में दो–तीन फिल्मो से ज्यादा में व्यस्त रहना मुझे पंसद नहीं है। महेश और मधुर भंडारकर की अगली फिल्मों के अलावा डेविड धवन की अगली फिल्म में भी मैं शायद काम करुँ। मेरी एक बहुत अच्छी फिल्म 'लाल सलाम' शीघ्र प्रर्दशित होगी। पदम कुमार की एक फिल्म 'सुपारी' मे मेरी काफी अच्छी भूमिका है, लेकिन इसकी शूटिंग बीच में ही रुक गयी। मुझे खुशी है कि एकमात्र अक्स को छोड़कर किसी भी कमर्शियल फिल्म में मुझे जाया नहीं किया गया है। मुझे अच्छे निदेशक मिले।

संजय दत्त, सुनील शेट्ठी, गोंविदा सहित कई नायकों ने आपकी काफी सराहना की है?

सुनकर अच्छा लगा। मैं तो सिर्फ यह कोशिश करती हूँ कि मेरे व्यवहार से कोई दुखी न हो। संजय दत्त के साथ मैंने 'पिता' में काम किया है। एक और फिल्म में उनके साथ काम करने की बात हैं बेहद अच्छे इंसान हैं। बस उन्हें अपने लेट लतीफी की आदत को सुध ाारनाा होगा। सुनील और गोंविदा के साथ नयी फिल्मों की शूटिंग शुरु नहीं हुई, यह मैने सुन रखा है कि ये दोनों कलाकार भी काफी 'को–आपरेटिव' है।

क्या वजह है कि आपने अधिकतर क्षेत्रीय भाषा की गंभीर फिल्मों में काम किया है?

मेरे लिए भाषा कोई समस्या नहीं बनती। यदि फिल्म का करेक्टर दमदार हो और उसमें मानवीय रिश्तों को उजागर किया गया हो, तो ऐसी कोई भी फिल्म में सहर्ष करने के लिए तैयार हो जाती हूँ। पिछले दिनों मैने गुजराती की एक फिल्म 'धड़' में काम किया। इस फिल्म का किरदार मुझे जीवन के बहुत करीब लगा। इसी तरह मृणाल दा की फिल्म में मेरा कुछ ऐसा ही किरदार है।

☎ :430718

अविनाश सिंह

प्रोपराइटर

[redacted]

शादी विवाह, पार्टी एवं किसी भी अवसर पर

उच्च श्रेणी की सेवा हेतु सम्पर्क करें:

ऊँ जी0 टेन्ट हाउस

पता : 506, राजरुपपुर, (जे0बी0सिंह की चक्की), इलाहाबाद

हमारा अगला अंक होली कें रंग और रस से भरा हुआ रहेगा। इसमें हास्य कविताए, व्यंग्य, और मजेदार कहॉनियॉ रहेगी साथ किस पार्टी और नेता को मिली कुर्सी और क्यो?

जानने के लिए पढे 15 मार्च तक। अपनी विज्ञापन एवं होली की बधाई अभी से बुक करवा ले। नहीं तो सुनहरा मौका हाथ से निकल जायेगा। विज्ञापन बुकिंग शीघ्र करवा लें अगले अंक में पढ़ना न भूलिए, अपनी प्रति अभी से बुक करा ले।

विश्व स्नेह समाज
मासिक पत्रिका

सम्पादकीय कार्यालयः
277/486, एफ0सी0एल0सी0कम्पाउन्ड
चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद–8

शाखा कार्यालयः
एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर
कौशाम्बी रोड, धुस्सा, इलाहाबाद
☎ 432953